CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सम्पूर्ण

# शिव पुराण

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

# सम्पूर्ण
# शिव पुराण

## (ग्यारह खण्ड)

संग्रह कर्ता
रूपकिशोर

卐

: प्रकाशक :
**लक्ष्मी प्रकाशन**
4734, बल्ली मारान, दिल्ली–110006

मूल्य : बारह रुपये

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.


## भारत में पहली बार कैमरे के साथ हाथ घड़ी मुफ्त

मुफ्त
कलाई
घड़ी

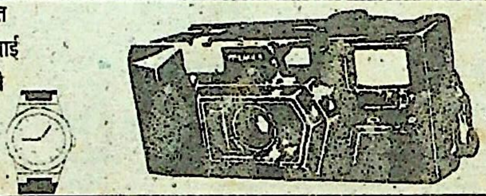

इस कैमरे के द्वारा रंगीन व ब्लैक एण्ड व्हाइट फोटो खींच सकते हैं। इसमें फ्लैश भी लगा सकते हैं। इस कैमरे के द्वारा आप विवाह पार्टी में जाकर 5000/- रुपये महीना तक कमा सकते हैं। इस कैमरे की मशहूरी के लिए कम्पनी द्वारा कैमरे के साथ हाथ घड़ी मुफ्त भेजी जाती है। कैमरे का मूल्य 275/- रुपये केवल डाक खर्च सहित। घर बैठे प्राप्त करें।

**विक्की एजेन्सी (L.P.)**

पो. बॉ. नं. 1131, दिल्ली-110006

## करामाती अँगूठी

## हर एक काम में कामयाबी

इस तिलस्मी अँगूठी को पहनने से आप जिस पुरुष या स्त्री का नाम लेंगे वह देखते ही देखते फौरन आपके वश में हो जायेगा। मनचाही शादी होगी। व्यापार में लाभ होगा। परीक्षा में पास होंगे। जिस भी काम में हाथ डालोगे फतेह पाओगे। इस तांत्रिक अँगूठी का प्रभाव कभी खाली नहीं जाता। ये तांत्रिक अँगूठी हर रोग में काम आती है। कीमत तांत्रिक अँगूठी 125 रुपये, स्पेशल फुल पावर 251 रुपये, जिसका चौबीस घण्टों में फौरन असर होता है। एक बार अवश्य आजमायें। डाक खर्च दस रुपये अलग होगा।

*मँगाने का पता :*

**हनुमान ज्योतिष भण्डार (L.P.)**

पो. बॉ. नं. 1779, दिल्ली-110006

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.



॥ ओ३म नमो शिवाय॥

# ॥ श्री शिव पुराण॥

ध्यायोन्नित्यं महेशं रजतगिरिनभं चारुचन्द्रवतंसम्।
रत्ना कल्पोज्वलखंड परशु मृग-वराभीतिहस्त प्रसन्नम्॥
पद्मासीनं समान्तात स्तुतः मसरगणैव्यध्रिकृतिं वसानम्॥
विश्ववाद्य विश्व बीजं निखिल भयहरं पंचवकत्रं त्रिनेत्रम्॥

## पहला अध्याय

एक समय की कथा है कि भगवान श्री वेदव्यास जी महाराज के योग्य शिष्य परम पौराणिक श्री सूतजी श्री गंगाजी और कालिन्दी के संगम परम-पावन प्रयाग में भगवान शंकर की तपस्या कर रहे थे कि वहां पर महर्षि शौनक बहुत से ऋषियों के साथ पधारे और श्री सूतजी को भगवद् भजन में लीन देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुए और हाथ जोड़कर उनसे प्रार्थना की 'प्रभु?' हम लोग संसार सागर में डूब रहे हैं और हमें किनारा दिखाई नहीं देता। सौभाग्य वश हम आज इधर आप के चरणों के दर्शनों के लिए आ निकले हैं। अब आप हम लोगों पर दया करके हमें अथाह सागर से निकालिये। और हमें ज्ञान गंगा में स्नान करवा कर एवं बुद्धि प्रदान कीजिए। प्रभु! समय अति भयंकर है और आगे इससे भी भयंकर आने वाला है। हे मुनिश्वर जान पड़ता है कि आने वाले समय में प्राणी घोर पापी होंगे, अपने सत्य सनातन धर्म को छोड़कर निन्दित धर्मों को अपना कर एकदम निन्दा का पात्र बन जायेंगे। अधिकतर मनुष्य असत्यवादी, धन के इच्छुक सत्यकर्म रहित..

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.



पाप कर्मों में लगे रहेंगे। और कलियुग के प्रभाव से अपनी जाति के कर्मों को छोड़ जप, तप, तीर्थ इत्यादि को भुला कर पाखण्ड में पड़ जायेंगे। उनसे यम नियम तथा संयम कुछ भी न हो सकेगा। अज्ञानता में पड़कर इन्द्रियों के दास बनकर व्यभिचारी आदि कुकर्मों में पड़कर पाप नाम से पीड़ित हो जायेंगे सत्य को त्यागकर और झूठ को अपनाकर प्रेम और प्यार को त्यागकर शत्रुता को अपनायेंगे। वरण व्यवस्था नष्ट हो जायेगी। ब्राह्मण अपनी जाति के कर्मों को अपना लेंगे, इसी प्रकार क्षत्रिय, वैश्य और शुद्रों के कर्मों को अपना लेंगे, इसी प्रकार क्षत्रिय भी अपने कर्मों से गिर जायेंगे। वैश्य वरण क. भी यही दशा होगी शूद्र, ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य बनाने का दावा करेंगे।

कहने का तात्पर्य यह है कि सभी वरण अपने-अपन धर्म कर्म को त्याग कर व्यभिचारी होकर पाप करने लगेंगे। देव गुरु तथा मित्रों का अपमान होगा। ब्राह्मण, क्षत्रिय जातियों की धज्जियाँ उड़ाई जायेंगी। क्रोध और अहंकार में फंस कर संसार के अथाह सागर में समा जायेंगे शुद्र यज्ञोपवीत धारण करके अपने आप को ब्राह्मण तथा क्षत्रिय कहकर पुकारेंगे। इस प्रकार पाप-ताप से पीड़ित हो अपनी आयु को भी कम कर लेंगे। स्थान-स्थान पर शूद्र देव मन्दिरों में प्रविष्ट होने के लिये प्रयत्न करेंगे। ब्राह्मण माँस व मदिरा का उपयोग करने लगेंगे। क्षत्रिय वेश्यागामी, कुसंगी और पाप परायण बन जायेंगे। वैश्य व्यापार द्वारा अधर्म करने लगेंगे। ब्राह्मण क्षत्रियों की निन्दा करेंगे पुरुष अन्य स्त्रियों को और स्त्रियां अन्य पुरुषों को कुदृष्टि से देखेंगी। वेश्याएं सतवन्ती नारियों की

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.


निन्दा करके अपने आपको कुलवन्ती बताएंगी। पिता पुत्र, मां-बेटी और बाप बेटी के रिश्तों में कई उल्ट फेर हो जायेंगे। पिता पुत्री की और पुत्र पिता की निन्दा करेगा। स्थान-स्थान पर माता-पिता और गुरुजनों की निन्दा होगी। जप तप और शील एकदम नष्ट हो जायेंगे। पुरुष स्त्रियों को केवल भोग-विलास की सामग्री समझने लगेंगे। ब्राह्मण केवल यज्ञोपवीत से ब्राह्मण बनेंगे। चतुर व्यक्ति अपने दम्भ व पाखंड से पूजे जाने लगेंगे। ( कलिपूजा तीन निशानी कंघा शीशा सुरमेदानी ) बालों का संवारना ही शृंगार होगा। पाप कर्म करके अपने परिवार का पालन करने वाला ही धनवान तथा बुद्धिमान समझा जावेगा। तीर्थ-यात्रा करना पाप माना जावेगा। इस कलिकाल में सभी लोग धर्म के विरुद्ध चलने लगेंगे। लोभ तथा मोह का राज्य होगा। सज्जन दुष्ट और दुष्ट सज्जन समझा जायेगा।

प्रभु! कलियुग के जीव किस प्रकार सद्‌गति को प्राप्त होंगे। भगवन! अब इस पर प्रकाश डालिये और हमें वह मार्ग बतलाइये जिससे कि सब लोगों का बेड़ा पार हो। भगवान दयालु गुरु अपने शिष्यों से कोई गुप्त से गुप्त भेद भी नहीं छिपाते। फिर आपके समान तो दूसरों का उपकार करने वाला कोई है भी नहीं। आप भगवान श्री वेदव्यास जी महाराज के प्रिय शिष्य हैं। आपने उनसे सभी पुराणों का प्राप्त किया है अतएव आप हमारी प्रार्थना स्वीकार करके हमारे हृदय का मोह दूर कीजिए।

***

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.



# दूसरा अध्याय

ऋषिगणों की बात सुनकर परम पौराणिक अत्यन्त प्रसन्न हुए। और थोड़ी देर तक भगवान श्रीशंकर का ध्यान करने के पश्चात् बोले-'वत्स शौनक तथा अन्य ऋषिगण! आप लोग धन्य हैं जो कि आप लोगों ने ऐसा त्रिलोक हितकारी उत्तम प्रश्न किया है। सुनो मैं आपके सन्मुख भगवान शंकर की वह कथा कहूंगा जिसके श्रवण करने से कलिकाल में समस्त पाप नष्ट हो जायेंगे। भगवान शंकर का यह चरित्र कलि के पापों का नाश करने वाला परमार्थदायक और वेदान्तसार का भी सर्वस्व हैं। भगवान शंकर के चरणों में प्रेम करने वाला अनेक पापों को नष्ट करके परम पद को प्राप्त होता है। उन का यश गान करके लाखों मनुष्यों को मोक्ष की प्राप्त हो चुकी है। मस्तक पर भस्म का लेप करके भगवान शंकर का ध्यान करने से अवश्य ही शिव लोक की प्राप्ति होती है। उनको नमस्कार करने वाले व्यक्ति पुत्र पौत्र इत्यादि को प्राप्त करते हैं और भगवान शंकर के भक्त तह्मघात, हिंसा, मदिरा-पान और व्रत तोड़ने इत्यादि के पापों से अवश्य मुक्त हो जाते हैं। अतः प्रत्येक मनुष्य को चाहिये कि संसार का दुख रुप जानकर भगवान श्री शंकर का ध्यान करे। संसार का त्याग करने वाले वेदों को पढ़ने वाले और माया से रहित मनुष्यों को भगवान शंकर का ध्यान करना चाहिए। संसार के दुखों से छुटकारा पाने इच्छुक मनुष्यों को त्रिशूलधारी भगवान् श्री शंकर का ध्यान करना चाहिये। कमल के पत्ते पर जल के समान शंकर के पुजारियों के पास फटकने तक भी नहीं जाते।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.



शौनक इत्यादि ऋषिगण मरम पौराणिक श्री सूतजी के ऐसे वचन सुनकर हाथ जोड़कर बैठ गये और फिर ऋषि-मंड़ल की ओर महर्षि शौनक ने प्रश्न किया-' भगवन ! श्री शिव जी महाराज निर्गुण है तो सगुण-रुप कैसे हुए। यह आप हमें बताइये भगवान शंकर ने संसार को क्यों उत्पन्न किया और फिर वह स्वयं कैसे उत्पन्न हुए। क्या प्रलय के समय सिधार करने के लिए! भंगवान किस प्रकार अवतार धारण करते है और अपने भक्तों के वश होकर उनका किस तरह से कल्याण करते हैं?

भगवन! गुरु कृपा से आप भूत, वर्तमान और भविष्य सभी के संबंध में जानते हैं, और माता, पिता गुरु तथा हितैषी ही है। संसार में अएने समान विद्वान और संयम आदि नियमों का पालन करने वाला कोई नही। आपने भगवान से सब कुछ श्रवण किया है। और सौभाग्य से आपसे भेंट भी हो गई है। बिना सौभाग्य से भला आपका दर्शन कहां प्राप्त होते है। प्रभु! आप कलि के पापों का नाश करने वाली, पर मार्थदायक भगवान शंकर की परम शक्ति तथा पवित्र कथा सुनाइये।

ऋषि-गणों के ऐसे वचन सुनकर श्री सूतजी अत्यन्त प्रसन्न हुए और बोले-हे ऋषिगण! जो प्रश्न इस समय तुमने मुझसे किया है। यही प्रश्न देव ऋषि नारद ने अपने पिता श्री ब्रह्मा जी देव ऋषि ने श्री नारद जी को जो कुछ बताया था, मैं तुम्हें सुनाता हूं, ध्यान पूर्वक सुनो।

हे ब्राह्मण देवताओं! एक समय की बात है कि देव ऋषि नारद तप करने के लिये हिमालय पर्वत पर जा पहुंचे। और पतित पावनी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.


गंगा के तट पर एक सुन्दर स्थान पर बैठकर, मौन हो बहुत दिनों में पूर्ण होने वाला तप करने लगे। देव ऋषि नारद के उग्र रूप को देखकर इन्द्र भयभीत हो गया और उसने सोचा कि शायद देव ऋषि नारद उसके राज्य को हथियाने के लिए तप कर रहे हैं अतएव, उसने कामदेव को बुलाकर कहा-मित्र वर! मैं तुम्हारी सहायता करना चाहता हूं। देव ऋषि नारद इस समय हिमाचल पर्वत पर श्री गंगाजी के तट पर उग्र तप कर रहे हैं। कहीं वह मेरे राज्य को ही न हथिया लें। अतः तुरंत ही हिमालय पर्वत पर पहुंचकर उनके तप को खंडित कर दो।

देवराज इन्द्र की बात सुनकर कामदेव ने अपनी सेना को साथ लिया और उस स्थान के लिए रवाना हो गया जहाँ पर देव ऋषि नारद तपस्या कर रहे थे कामदेव ने वहाँ पहुंचकर अपनी माया द्वारा सुन्दर बगीचों की रचना की। शीतल मन्द सुगंध मल्य पवन चलने लगी। कोकिला इत्यादि पक्षी मीठी-मीठी बोलियाँ बोलने लगे। फिर काम कला में परम प्रवीण अप्सरायें काम वर्द्धक नृत्य एवं हाव-भाव मिलित गीत सुचारू रूपेण करने लगी। लेकिन देव ऋषि नारद की समाधि भंग न हुई। इसमें देव ऋषि श्री नारदजी को कोई बड़ाई न थी। क्योंकि उस स्थान पर इससे पूर्व भगवान श्री शंकरजी भी उग्र तप कर चुके थे। यही पर भगवान श्री शंकर पर कामदेव ने चढ़ाई की थी और उनके द्वारा वह भस्म हो गया था तब दयालु और कृपालु भगवान शंकर ने उसकी पत्नी रति का दुख सहन न कर सकने के कारण उनको पुनः जीवित कर दिया था, लेकिन जीवित करने के साथ ही उन्होंने रति से कह दिया था।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.


कि मैं इस समय तुम्हारे पति को जीवित तो किये देता हूं किन्तु इस स्थान पर कभी भी प्रभाव न पड़ सकेगा अतएव देव ऋषि नारद भगवान शंकर की कृपा से बच गए ओर कामदेव हर तरह से चेष्टा करने पर भी उसका तप खंडित न कर सका।

कामदेव असफल होकर इन्द्र के दरबार में वापस पहुंचा और जो भी कुछ बीती थी उसे सुनाई। इन्द्र भगवान शंकर की न समझ सका उसने नारद जी तपश्चर्या के लिए उनकी प्रशंसा की। तपस्या समाप्त होने पर नारद जी को कामदेव पर विजय पाने के कारण अभिमान हो आया और वह भगवान शंकर की सेवा में उपस्थित होकर अपने तपश्चर्या की कथा को तथा कामदेव पर अपनी विजयी पाने के समाचार को बड़े अभिमान के साथ भगवान श्री शंकर को कह सुनाया।

भगवान शंकर ने सारा समाचार सुनकर देवर्षि नारद से मुस्कराते हुए कहा–ऋषिराज! आप धन्य हैं। किन्तु मेरी एक बात न भूलियेगा। कामदेव पर विजय पाने का समाचार जो कि आपने मुझे सुनाया है किसी और देवता को न सुनाईयेगा विशेषकर यह बात भगवान श्री विष्णु के पूछने पर भी उनसे न कहना।

सूतजी बोले–हे ब्राह्मण देवताओं! भगवान श्री शंकर जी ने श्री नारद जी का सही तौर पर पथप्रदर्शन किया था परंतु श्री शंकर की बात नारद जी को भली प्रतीत न हुई। वहाँ से चलकर वह अपने पिता श्री ब्रह्मा जी के पास पहुंचे उनको प्रणाम करके अपनी तपश्चर्या की सफलता का समाचार तथा अभिमान के साथ कामदेव पर विजय पाने का सब समाचार कह सुनाया। ब्रह्माजी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.



ने भगवान श्री शंकर का ध्यान किया और असल मामला क्या है सब जान गये। ब्रह्मा जी ने भी उनको यह वृतान्त अन्य देवताओं को सुनाने से मना किया और भगवान श्री विष्णु जी से कहने के लिए भगवान श्रीशंकर के समान ही मना किया। परन्तु श्रीनारद जी के मन में अहंकार उत्पन्न हो चुका था इसलिए उनको श्री ब्रह्मा की यह बात भी अच्छी नहीं है और वह वहां से चलकर श्री विष्णु लोक में पहुंचे। भगवान श्री हरि ने उनका आदरसत्कार करके उनका कुशल मंगल पूछा। इस पर नारदजी ने श्री विष्णु के सामने अपनी तपश्चर्या में सफलता पाने और कामदेव पर विजयी पाने का समाचार बड़े अभिमान के साथ कहा। नारद जी की बात सुनकर भगवान श्री विष्णु मुस्करा कर कहने लगे-भगवान शंकर की मोहिनी माया परम धन्य है। आप तो ब्रह्मचारी हैं। भला कामदेव आपका क्या बिगाड़ सकता है!

भगवान श्री विष्णु की बात सुनकर नारद जी बोले प्रभु! यह सब आपकी कृपा का ही फल है।

इतना कहकर देव ऋषि नारद वहां से चल दिये। उसी समय भगवान शंकर की माया ने उनके मार्ग में एक बड़ा सुन्दर नगर रच दिया उस नगर के राजा का नाम था शीलनिधि! जिसकी पुत्री का नाम विश्वमोहिनी था जो कि रूप और गुणों की खान थी जहाँ कहीं अपनी इच्छा से घूमने वाले देव ऋषि नारद जब उस महानगरी में पहुंचे तो मालूम हुआ कि आज महाराजा शीलनिधि ने अपनी राजकुमारी विश्वमोहिनी का स्वयंवर रचा रखा है। और वहाँ पर उस दिन संसार के कोने-कोने से राजा महाराजा आये हुए थे। उस

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.



नगर में पहुंचकर जब देव ऋषि नारद से स्वयंवर का समाचार सुना तो वह भी राजा के महल में जा पहुंचे। राजा ने श्री नारद जी का आदर सम्मान किया राजा ने अपने सिंहासन पर से उठकर नतमस्तक होकर प्रणाम किया और अपने सिंहासन पर उनको बैठाया। राजकुमारी को बुलवाकर उससे भी देव ऋषि से चरणों में प्रणाम करवाया नारद जी राजकुमारी विश्वमोहिनी को देखते के साथ उस पर मोहित हो गये और उन्होंने उसके शरीर के लक्षण को देखकर जान लिया कि इस देव सुन्दरी का वर अजर अमर और अविनाशी होगा।

राजा उसकी कन्या को आशीर्वाद देकर वहां से चल पड़े और चलते-चलते सोचने लगे कि यदि मैं किसी प्रकार सुन्दर और रूपवान होकर इस कन्या को वरलूँ तो कितना ही अच्छा हो ऐसा सोचकर उन्होंने तुरन्त भगवान श्री विष्णु का ध्यान किया। ध्यान करने के साथ ही भगवान विष्णु प्रकट हो गये। और देवर्षि श्री नारद जी का मतलब समझकर बोले- ऋषिराज मैं आपके मन की बात भली-भाँति समझता हूं। आप किसी बात की चिंता न करें। आप स्वयंवर में पधारें जिस तरह एक उत्तम वैद्यरोगी को रोगी की इच्छानुसार उसको औषधि नहीं देता बल्कि उसका हित सोचकर ही उसे औषधि देता है उसी प्रकार मैं भी आपका हित करूंगा।

इतना कहकर भगवानश्री विष्णु अन्तर्धान हो गये! नारद जी भगवान श्री विष्णु की बात का मतलब न समझ सके भगवद् इच्छा से नारद जी का समस्त शरीर तो भगवान विष्णु जैसा बन गया लेकिन चेहरा बन्दर जैसा बन गया। लेकिन देवर्षि इस भेद को न

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.


जान सके और स्वयंवर भूमि में आकर राजाओं तथा महाराजाओं के मध्य में आकर बैठ गये। उनको दृढ़विश्वास था कि विश्वमोहिनी उनके गले में ही जयमाला डालेगी। अब भगवान में देखिए भगवान नारद जी को जो वानर का रूप प्रदान किया था वह केवल राजकुमारी ही देख सकती थी बाकी सब लोगों को उनका वास्तविक रूप ही दिखाई देता था। जिस समय राजकुमारी ने पण्डाल में प्रवेश किया तो नारदजी अपनी जगह से बार-बार उठकर उसकी ओर देखने लगे। ब्राह्मण का वेष बनाये हुए दो शिवदूती भी वहां पर विराजमान थे वह जोर-जोर से हंसकर उनका मजाक उड़ा रहे थे। मगर नारद जी तो उस समय कामान्ध हो रहे थे इस लिए वह उनकी हंसी नहीं समझ सके। वह कहने लगे, वाह! वाह!! क्या कहना है भगवान ने आपको कितना अच्छा स्वरूप प्रदान किया है अब अतिरिक्त यह कन्या किसी अन्य को पसंद नहीं करेगी।

उसी समय राजकुमारी विश्वकन्या भी वहां आ पहुंची और नारद जी का रूप देखकर घृणा से दृष्टि फेरकर किसी अन्य वर को ढूंढने लगी। नारद जी अत्यन्त व्याकुल हुए और उचक-उचक कर उसी की ओर देखने लगे। उसी क्षण भगवान विष्णु वहाँ आ गए और राजकन्या ने आगे बढ़कर उनके गले में जय माला डाल दी। यह देखकर नारद जी बहुत दुःखी हुए। तब भगवान शंकर के दूत हंसते हुए बोले, 'जरा दर्पण में अपना मुख तो देखो।'

***

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.



# तीसरा अध्याय

इस प्रकार शिवदूतों के वचन सुनकर देवर्षिनाद पानी में अपना प्रतिबिम्ब देखा तो अपना वानर जैसा मुख देखकर क्रोध में भर गए। क्रोध में भरकर पहले तो उन्होंने शिव दूतों को शाप दे डाला उनसे उन्होंने कहा तुम दोनों ने ब्राह्मण रूप होकर मेरी हंसी उड़ाई है। इसी कारण से तुम ब्राह्मण कुल में उत्पन्न होकर राक्षस बनोगे। शाप सुनकर शिवगण शिवलोक को वापिस लौट गए।

अब देवर्षि नारद अपने असली स्वरूप को प्राप्त होकर कुछ पूछो न कितने क्रुद्ध हुए। उनके क्रोध का कोई वार पार न रहा उन्होंने निर्णय किया कि या तो मैं विष्णु को शाप दे दूंगा या अपना शरीर त्याग दूंगा।

ऐसा सोचकर नारद जी श्री विष्णुलोक में भगवान श्री विष्णु के पास पहुंचे ओर भगवान श्री विष्णु को विश्वमोहिनी के साथ बैठे देखा। देवर्षि को देखकर भगवान श्री विष्णु ने हंसते हुए कहा–"कहिए ऋषि राज! आज आप बड़े दुःखी प्रतीत हो रहे हैं?

भगवान श्री हरि के इन शब्दों ने मानो जलती आग पर घी का काम किया। वह क्रोध के साथ अहंकार में भरकर बोले–"नारायण! आप बड़े छलिया हैं अमृत बांटते समय भी तुमने मोहिनी रूप धारण करके दैत्यों के साथ महान छल करके उनको अमृत के स्थान पर वारूणी मदिरा दे दी थी और उनसे अमृत कलश छीन लिया था जालन्धर के साथ छल करके उसकी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.



पतिव्रता स्त्री के सत को नष्ट किया। भगवान शंकर को विष पिलाया और मणि तथा लक्ष्मी को इस प्रकार अपना लिया भगवान श्री शंकर ने तुमको सर्वश्रेष्ठ बनाकर बड़ी भारी भूल की है। तुमने केवल सर्वश्रेष्ठ होने के अहंकार में भरकर यह सब अनर्थ किए ! अतः तुम हर तरह से आजाद हो और यह जानते हो कि तुम्हें दण्ड देने वाला कोई नहीं है। आज तुम अपनी करनी का फल पाओगे आज मैं तुमको ऐसा शाप दूंगा कि जिससे तुम भविष्य में कभी ब्राह्मणों को न सता सकोगे माना कि तुमको भगवान श्री शंकर ने वरदान दे रक्खा है। मगर मैं तुम्हें शाप देता हूं। जो कि कभी झूठ नहीं हो सकता। तुमने मनुष्य-शरीर धारण करके मेरा अपमान किया है। बस इसी रूप में तुम मनुष्य राजा होवोगे ओर इसी प्रकार स्त्री वियोग भोगोगे, जिस प्रकार से तुमने स्त्री क्लेष में मुझे दुखी किया है तुमने वानरों जैसा मेरा मुख बनाया है। इसलिए यही वानर तुम्हारी सहायता करेंगे तुमने स्त्री के लिए मेरा अपमान किया है इसलिए तुम मनुष्यों की भाँति स्त्री वियोग में दुःखित रहोगे। भगवान श्री विष्णु ने भगवान श्री शंकर की इच्छा जानकर वह शाप अंगीकार कर लिया ठीक उसी समय भगवान श्री विष्णु की माया ने देवर्षि नारद को अपने जाल से मुक्त कर दिया भगवान श्री विष्णु के साथ जो कन्या दिखाई दे रही थी वह अदृश्य हो गई। और देवर्षि नारद जी का माया द्वार लुप्त हुआ ज्ञान फिर आकर उपस्थित हो गया।

तब नारद जी पछताने लगे और कहने लगे कि यह मैंने क्या कर डाला। उन्होंने भगवान से कहा-'भगवन! आपकी माया को

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.



पार कोई नहीं पा सकता। मैं अपने आपे में नहीं था। नाथ? मुझे क्षमा कर दो। मैंने अज्ञानवश भगवान श्री शंकर की माया से मोहित होकर आपको शाप दे डाला है। अब मुझे घोर नरक में पड़ना होगा। प्रभु अब कोई ऐसा उपाय कीजिए जिससे कि मैं इस पाप से मुक्त हो जाऊं। मुझे नरक की यातना से बचाइये, दीनानाथ! मैं आपका दास हूं।

इतना कहकर देवर्षि नारद भगवान श्री विष्णु के चरणों में गिर पड़े। तब भगवान श्री विष्णु ने उनको उठाकर प्रेम सहित कण्ठ से लगाया और मधुर वाणी द्वारा कहने लगे-"नारद जी तुमने भगवान श्री शंकर का कहा न माना, यह सब उसका परिणाम है। वह पामब्रह्म सच्चिदानन्द सत्व नज, तुमसे परे है निर्गुण निर्विकार हैं। उन्हीं के वरदान से मैं सर्वश्रेष्ठ बना हूँ। इसलिए अब तुम जाकर भगवान श्री शंकर का ध्यान करो। उनकी दया के बिना परम पद की प्राप्ति नहीं होगी उन्हीं भगवान श्री शंकर ने तुम्हारे मुख से मुझे शाप दिलवाया है। मुझे भगवान श्रीशंकर से प्रिय और कोई नहीं है। इसलिए अज तुम उनको अपने हृदय मे धारण करते हुए काशीपुरी में जाओ। और वहाँ जाकर समस्त संसयों का त्याग कर केवल उन्हीं के नाम का जाप करो, उन्हीं का गुणगान करो और उनके शतनाम स्तोत्र का प्रेम से पाठ करो। इससे तुम्हारे पाप नष्ट हो जाएंगे। श्री काशीपुरी मे भगवान श्री शंकर के दर्शन करने के पश्चात तुम अपने पिता ब्रह्मा जी के पास जाकर भगवान श्री शंकर के नाम को सुनो क्योंकि श्री ब्रह्मा जी भगवान श्री शंकर के अनन्य भक्त हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.



श्री सूत जी बोले- 'ऐसा कहकर भगवान श्री विष्णु अर्न्तध्यान हो गए। और देवर्षि नारद वहाँ से काशी पुरी को रवाना हो गए मार्ग में उन्हें वह दोनों शिवदूत भी मिले जिन्होंने कि स्वयम्बर मण्डप में उनकी हंसी उड़ाई थी। उन्होंने श्रीनारद जी के चरणों में गिरकर क्षमा की याचना की। उन दोनों की प्रार्थना सुनकर श्री नारद जी बोले- हे रूद्रगणों! श्री शंकर की माया से मोहित होकर मैंने यह अनर्थ कर डाला लेकिन मेरा वचन असत्य नहीं हो सकता अतएव तुम्हें शाप का फल तो भोगना ही पड़ेगा। तुम दोनों मुनिवीर्य द्वारा एक राक्षसी से जन्म पाओगे तुम दोनों भगवान श्री शंकर के परम भक्त और प्रतापी होंगे। समस्त सृष्टि पर तुम्हारा अधिकार होगा। अनेकों सुख भोगने के पश्चात भगवान श्री विष्णु अपने दूसरे रूप में आकर तुम्हें मुक्ति प्रदान करेंगे।

ऐसा कहकर नारद जी श्री ब्रह्मा के पास जाकर प्रार्थना करने लगे-''प्रभु! भगवान श्री विष्णु की कथा तो आपने मुझे सुनाई थी। अब मुझे भगवान शंकर के नेक चरित्रों के सुनने की अभिलाषा है मैं जानना चाहता हूं कि सदा शिव सृष्टि के आदि में किस रूप मे आते हैं? सृष्टि के मध्य में उनकी कैसी लीला होती है और सृष्टि के अन्त में अर्थात सृष्टि के प्रलयकाल वह सदाशिव महेश्वर कहां निवास करते हैं? और प्रसन्न होकर अपने भक्त को क्या देते हैं। आप भगवान सदाशिव के सभी चरित्र मुझे सुनायें

***

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.



# चौथा अध्याय

महर्षि सूतजी ऋषि गणों को इतनी कथा सुनाकर कहने लगे श्री नारद जी का प्रश्न सुनकर श्री ब्रह्मा जी अत्यन्त प्रसन्न हुए। भगवान श्री सदाशिव का नाम सुनकर श्री ब्रह्मा जी को रोमांच हो आया। अश्रुपात होने लगा उन्होंने कहा-"नारद तू धन्य है। तूने मेरे कूल का नाम उज्जवल कर दिया है। क्योंकि तुम भगवान श्री सदाशिव के भक्त बने हो। अब अपनी बुद्धि के अनुसार पहले भगवान सदाशिव के मैं शिव के निर्गुण चरित्रों को कहूंगा। उसके पश्चात मैं उनके सगुण चरित्रों का वर्णन करूंगा।

सबसे पहले यहां सृष्टि का कोई चिन्ह न था। तब सर्वव्यापक, सत, चित आनन्द स्वरूप केवल सदा शिव ही थे। क्योंकि वह सच्चिदानन्द स्वरूप हैं। उनका मन और वाणी उनके आधीन हैं। न ही वह सूक्ष्म है और न ही स्थूल है, न ही वह छोटे हैं और न ही बड़े है, न ही वह नीचे हैं और न ही ऊंचे हैं। माया से रहित तथा पापों से परे हें। वह जन्म–मरण से मुक्त हैं। निराकार अजन्मा और अनादि हैं सारी सृष्टि के मालिक तथा सबसे बड़े हैं। कर्मों का फल देने वाले, सर्वव्यापक, आदि अन्त से रहित ऐसे भगवान सदाशिव की उपासना विष्णु भी करते हैं और मैं भी करता हूं। उनकी कृपा के बिना कोई कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकता। भले हीं योगी ध्यानावस्था में उन्हें देख लें लेकिन उनके आदि और अन्त को बिल्कुल नहीं जानते। उन सम्पूर्ण ज्ञान और सत्य स्वरूप भगवान श्री सदाशिव को वेद "नेती" "नेती" कहकर पुकारते है। मूर्ख मनुष्य भला उन्हें क्या जान सकते हैं। वह निर्गुण है बिना आंख

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh:



के देखते हैं, कान के बिना सुनते हैं, बिना नाक के सूंघते हैं, बिना मुख के सब कुछ खाते हैं, बिना जिव्हा के बोलते हैं। बिना हाथों के सारे काम करते हैं, और बिना पैरों के चलते हैं जिस महापुरूष के ऐसे विलक्षण काम हों उनकी स्तुति भला कौन कर सकता है उन्होंने इच्छा की कि मैं एक होऊं। और इस इच्छा के उत्पन्न होने के साथ ही वह एक हो गए। इस प्रकार निर्गुण व सगुण में कोई भेद नहीं भगवान सदाशिव के सगुण स्वरूप का केवल ध्यान करना ही समस्त फलों का करने वाला है। वही भगवान ब्रह्मा और विष्णु के उत्पन्न करने वाले है। सब कर्मो के साक्षी और विराट स्वरूप है। उनके नाम शिव, शंकर, हर, महेश, परम देव, जगदीश, अमीश, विदुध, परमात्मा, ब्रह्मा, ग्रीश, शम्भ, सदाशिव, परमेश्वर पार्वती पति त्रिशूलधारी चक्करी, ईश्वर सुखदाता आदि इत्यादि असंख्य हैं। वही भगवान सदाशिव परमेश्वर सृष्टि के करता-धरता और आनन्द देने वाले है। उमापति भगवान परमानन्द सूर्य चक्कर इत्यादि के गुणों से मुक्त सृष्टि ब्रह्मा व विष्णु को उत्पन्न करने वाले हैं। ऐसे भगवान श्री सदाशिव सबके स्वामी को वैष्णव विष्णु के नाम से शक्ति-शक्ति के नाम से सूर्य उपासक रवि के नाम से गणेश की जी उन्हें वनायक के नाम से जानते हैं। वह भगवान सदाशिव सगुण स्वरूप कैसे हैं मस्तक पर जटा तथा गंगा भाल में चन्द्रमा और त्रिपुण्ड, कानों में कुण्डल सूर्य चन्द्र और अग्नि के समान तेजवान तीन नेत्र शुक्र की भांति नशा, बिम्बा फल के समान होंठ अत्यन्त पवित्र तथा तेजवान सुन्दर पांच मुख हैं। जिनमें से एक पूर्व की ओर वाला प्रातः के सूर्य के समान प्रभाव वाली दूसरा दक्षिण की ओर तीन नेत्रों वाला अत्यन्त भयानक, तीसरा

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.



मुख पश्चिम की ओर मस्तक पर अर्ध चन्द्रमा धारण करने वाला चौथा मुख उत्तर की ओर मूँगे के वरण माला है। जिनमें लम्बे-लम्बे केश लटकते हैं। पाँचवां मुख नीचे की ओर है जिससे कि वह अपने भक्तों के हृदय मे आनन्द उत्पन्न करते हें उस मुख पर कमल के समान सुन्दर आँखें हैं। उसका रंग सुन्दर और तेजवान है इस प्रकार भगवान सदाशिव पंचालन के नाम से प्रसिद्ध है। उनके कण्ठ में तीन रेखाएं हैं। हाथ में त्रिशूल और कण्ठ में मुण्डमाला धारण किए हुए हैं। उन्हें कोई चतुर्भुज, कोई पंचभुज और कोई दसभुज भी कहते हैं। उनके हाथों के नाना प्रकार के अस्त्र शस्त्र विद्यमान हैं। अंगुलियां अत्यन्त सुन्दर तथा सुडौल हैं भगवान सदाशिव को दक्ष बड़ा लम्बा चौड़ा पेट, सुन्दर, नाभि गंभीर कटि अद्भुत जाँघें हरी कदली खम्बों के समान चिकनी गोल और सुडौल तलबे चमकीले चन्द्रमा के समान स्वच्छ सुन्दर श्वेत बरन वाले भगवान सदाशिव मस्तक पर भस्म लगाये हुए पांचों कलाओं तथा ब्रह्मों से युक्त तीनों शक्तियों को धारण किए हुए पाँच और अक्षरों से बने हुए शरीर वाले भगवान सदाशिव योगियों और महर्षियों के ध्यान में शीघ्र नहीं आते। जिस प्रकार वह अनेकों ध्यान वाले भी हैं। लेकिन उनको जानने वाला यहां कौन है? भगवान सदाशिव की महिमा, नाम और ध्यान अनगिनत है। जिनको वेद पुराण और तपस्वी भी नहीं जान सके। लेकिन उनकी कृपा से मूर्ख-से-मूर्ख भी उनके दर्शन कर लेते हैं। प्रमाण के लिए गंगा व्याधि आदि के नाम लिए जा सकते हैं। बिना प्रेम के उनको कोई नहीं देख सकता। सगुण रूप मे आकर सदाशिव

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.



ने अपनी शक्ति को उत्पन्न किया वह स्वच्छन्द शरीर वाली कभी नाश न होने वाली शक्ति प्राघन प्रकृति गुणवती माया विकास से रहित, जननी अम्बिका प्रकृति सम्पूर्ण लोकों की ईश्वरों त्रिदेवों की माता नित्या और मूल कारण कहलाई। जिसकी कि आठ भुजायें हैं और जो विचित्र मुख वाली और शुभा है भगवान सदाशिव को पारब्रह्म और उमा को शक्ति रूप जानना चाहिए। सदाशिव ने उमा के साथ विहार करने के लिए शिवलोक नामक क्षेत्र की रचना की उसी उत्तम क्षेत्र को काशी कहते हैं इसी उत्तम नगरी मे भगवान सदाशिव ने एक रत्नमयी सुन्दर भवन बनवाया और शिवा के साथ वहाँ रहने लगे उस सुन्दर नगरी को देखकर भगवान सदाशिव ने अपनी शक्ति शिवा से कहा-"यह स्थान बड़ा ही सुन्दर तथा पवित्र है और मुझे बड़ा ही प्रिय है। यहाँ पर नारकीय जीवों को भी किसी प्रकार का कष्ट न मिलेगा।"

यह कहकर भगवान सदाशिव ने शिवा के साथ रमण किया और सृष्टि उत्पन्न करने की इच्छा करके पार्वती से कहा-"प्रिये! मैं तुमसे एक ऐसी बात कहता हूं जो मुझे और तुम्हें दोनों को सुख देने वाली है।

***

## पांचवां अध्याय

भगवान श्री सदाशिव ने शिवा से कहा-देवी! हम एक ऐसा पुरूष पैदा करना चाहते हैं जो कि शान्त और सत्व गुणों से युक्त

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.



एवं गंभीरता में सागर के समान हो। हम इस जगत का सम्पूर्ण भार उसको सौंप कर शान्ति से काशी में निवास करें भगवान श्री शिव के वचन सुनकर जगदम्बा ने अपनी दृष्टि बांई ओर घुमाई। जिससे एक अत्यन्त सुन्दर पुरूष का अविर्भाव हुआ जो कि कलाओं से भरपूर शालवान गुणवान और बुद्धिमान था। उसका रंग श्याम था। सुन्दरता अद्वितीय थी। शरीर का प्रत्येक भाग सुडौल एवं सुन्दर था। कमल जैसे नयन मस्तक पर त्रिपुण्ड गले में कौस्तुक मणि चारों भुजाओं में शंख चक्करगदा और पदम को धारण किए हुए वैजयन्ती माला तथा पीताम्बर पहिने चौदह विघाओं को जानने वाला और सिद्ध रूप वाला परम शक्तिमान बार-बार प्रणाम करता हुआ भगवान सदाशिव के पास खड़ा हो गया। उसको देखकर भगवान सदाशिव और शिवा अत्यन्त प्रसन्न हुए। वह सुन्दर पुरूष सदाशिव तथा पार्वती से बोला- मेरा नाम तथा काम बताने की कृपा करें?

यह सुनकर भगवान सदाशिव ने हंसकर कहा सर्वत्र व्यापक होने के कारण तुम्हारा नाम विष्णु है अब तुम्हारे समान कोई दूसरा मनुष्य उत्पन्न न होगा तुम्हें लोग हरि तथा भगवान आदि नामों से पुकारेंगे भक्तों को सुख देने के लिए ही मैंने तुम्हें उत्पन्न किया है। तुम सबसे पहले परम कार्य साधन के लिए दृढ़ता से तप करो। ऐसा कहकर भगवान श्री सदाशिव ने भगवान श्री विष्णु को योग विघा का ज्ञान दिया तब भगवान श्री सदाशिव को प्रणाम किया। और भगवान श्री सदाशिव अन्तर्धान हो गए। भगवान श्री विष्णु बारह हजार दिव्य वर्षों तक भगवान श्री सदाशिव का ध्यान करते

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.



रहने पर भी उन्होंने अपने मनोरथ कल्याणकारी भगवान शंकर का दर्शन न पाया। इसमें भगवान श्री सदाशिव के दर्शन न होने के कारण श्री विष्णु को उदास देखकर आकाशवाणी हुई। हे विष्णु तुम अभी तप करो तुम्हें इतनी जल्दी हमारा दर्शन नहीं हो सकता। इस पर भगवान श्री विष्णु दुबारा तप करने के लिए बैठ गए। अब भगवान श्री विष्णु के तप के बीच में भगवान श्री सदाशिव की माया से भगवान श्री विष्णु के शरीर में से अनेक प्रकार की जलधारायें बहने लगी। भगवान श्री विष्णु उन जल धाराओं को देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुए। चारों तरफ जल ही जल हो गया और भगवान श्री विष्णु उस जल पर सो गये। उसी समय भगवान श्री विष्णु का श्रुति समस्त नारायण नाम हुआ और उस समय इस संसार में भगवान विष्णु के अतिरिक्त और कोई न था। फिर भगवान श्री विष्णु से सब तत्वों की उत्पत्ति हुई और उनका विस्तार हुआ। प्रकृति ने पहले महान उत्पन्न किया। महान से फिर तीन गुणों की उत्पत्ति हुई। फिर अहंकार उत्पन्न हुआ। इससे फिर तन मात्रा शब्द स्पर्श रूप रस और गन्ध उत्पन्न हुए। इसके पश्चात उससे पंचभूत पृथ्वी वायु जल और आकाश प्रकट हुए और नेत्र कान नाम जिव्हा और त्वचा ज्ञानेन्द्रियां उत्पन्न हुई और इस प्रकार पुरूष के बिना प्रकृति का यह सब जड़ रूप कार्य हुआ यह सब तत्व चौबीस प्रकार के थे और यह सब ब्रह्मरूप जल पर सो रहे।

भगवान विष्णु की निद्रावस्था में उनकी नाभि में से एक विशाल कमल उत्पन्न हुआ। इस कमल का विस्तार अनन्त योजन का था और ऊंचाई भी अनन्त योजन की थी।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.


ब्रह्मा जी बोले-"हे नारद! इसके पश्चात भगवान श्री सदाशिव ने अपनी दांई भुजा में से मुझे उत्पन्न किया और उस कमल पर रख दिया। मेरे चार मुख थे और अपने लाल मस्तक पर मैं त्रिपुण्ड धारण किए हुए था। मैंने कमल के अतिरिक्त और कुछ न देखा और यह न जान सका कि मेरा उत्पन्न करने वाला कौन है भगवान श्री सदाशिव की माया त्रिलोकों में फैली हुई है वह जो कुछ चाहते हैं वही करते हैं। भगवान श्री विष्णु देवता दैत्य दानव सब उन्हीं के अधीन हैं। जब मैं यह जान सका कि मैं कैसे उत्पन्न हुआ हूं तो मैं उस कमल की नाल को पकड़कर नीचे उतरने लगा मैं निरंतर सौ वर्षों तक उस कमल नाल को पकड़ उस की ओर उतरता रहा।

इस पर भी उसकी जड़ तक न पहुंच सका। तब मैं दुबारा कमल के ऊपर चढ़ने लगा। ऊपर आने में मुझे सौ वर्ष लगे लेकिन जब मैं ऊपर पहुंचा तो वहां कमल न था। यह देखकर मैं बड़ा घबराया। उसी समय मुझे आकाशवाणी सुनाई दी। जिसके द्वारा मुझे तप करने का आदेश दिया मैं अब तपस्या करने लगा। अब मैंने मंगलमयी आकाशवाणी के अनुसार बारह वर्ष उग्र तप किया। इसके पश्चात मुझे चार भुजाधारी सुन्दर नेत्र वाले भगवान श्री विष्णु के दर्शन हुए भगवान श्री विष्णु को देखकर मैं बड़ा प्रसन्न हुआ। लेकिन भगवानश्री सदाशिव की माया से मोहित होकर अपने पिता को न जानकर उनसे पूछा- तुम कौन हो? मेरा यह प्रश्न सुनकर भगवान श्री विष्णु बोले- तुम निर्भय हो जाओ। मैं तुम्हारी सम्पूर्ण कामनाएं पूर्ण करूंगा। नारद! तब उनकी बात सुनकर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.


रजोगुण से विरोध मानकर मैंने उनसे कहा-क्या तुम यह नहीं जानते कि मैं सबके संहार का कारण हूं। तुम मुझ पर ऐसे शासन कर रहे हो जैसे कि कोई अपने शिष्य पर करता है। मैं साक्षात जगत का कर्ता प्रकृति का प्रवर्तक सनातन आज विष्णु से उत्पन्न होने वाला और विश्व की आत्मा ब्रह्मा हूं। वेदों में मुझे स्वयं यू स्वाराट-परमेष्ठी और श्रेष्ठ कहते हैं। ब्रह्मा जी बोले- नारद! जब मैंने ऐसे कहा तो भगवान श्री विष्णु क्रोध में भरकर मुझसे कहने लगे-इस प्रकार की मूर्खता की बातें तुम्हारे करने के योग्य नहीं हैं सृष्टि को उत्पन्न करके पालन करने वाला मैं ही हूं। फिर सबको नष्ट करने वाला भी मैं ही हूं। निर्दोष नारायण जगन्नाथ मेरे ही नाम हैं। तुम मेरी माया के आधीन होकर ही ऐसा कर रहे हो क्योंकि यह सारा संसार माया के आधीन है। मैंने ही वेदों को बनाया है और मैंने ही कमल नाल से तुमको उत्पन्न किया है। मुझसे उत्तम और श्रेष्ठ दूसरा और कोई नहीं है। तुम अपने नाम पर इतना अहंकार न करो। अतएव सच और बोलने योग्य बातें बोलो जिस प्रकार अंधा अपनी आंखों का और निर्धन अपने धन का वर्णन करता है, उसी तरह तुम भी अपने नामों की बढ़ाई कर रहे हो। यदि तुम मेरा पूजन न करोगे तो तुम्हारा कल्याण नहीं होगा।

भगवान विष्णु की इस प्रकार की अहंकार पूर्ण बातें सुनकर मुझे हंसी आने लगी और इतना क्रोध आया कि मैं भगवान श्री विष्णु को अपना शत्रु समझने लगा। मैंने उनसे कहा, " आप मुझे बार-बार गुरू की भाँति उपदेश क्यों दे रहे हैं? आप अपने आपको वेद पाठी कहते हैं मगर मैं समझता हूं कि आप वेदों का नाम तक

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.


भी नहीं जानते। आपका यह क्रोध सर्वथा व्यर्थ है।'' इस बात को लेकर मेरे और भगवान विष्णु के बीच बड़ी भारी शब्द-युद्ध हुआ भगवान सदाशिव को माया से मोहित होकर हम दोनों ही अपने आपको सर्वश्रेष्ठ मानते रहे और इसमे शंका और सन्देह करने की कोई बात नहीं क्योंकि भगवान श्री सदाशिव की माया ही ऐसी है

***

## छठा अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा- नारद! मेरे और भगवान श्री विष्णु के इस शब्द-युद्ध को देखकर भगवान श्री सदाशिव प्रकट हो गए। लेकिन वह प्रकट हुए तेजपुंज के रूप में उस तेजपुंज को देखकर हम दोनों का युद्ध रूक गया। भगवान श्री विष्णु भयभीत होकर कहने लगे, ''ब्राह्मण! यह तेज कहाँ से प्रकट हुआ है? जो इस बात का पता लगा सके वही सबका स्वामी है। मुझे तो यह आदि अंत से रहित मालूम होता है। अतः हम दोनों इसका पता लगाते हैं। तुम ऊपर के लोकों की खोज करो। मैं नीचे के लोकों में जाता हूं।

भगवान श्री विष्णु की ऐसी बातें सुनकर मैं अहंकार में भर कर उनके कहने के अनुसार पता लगाने के लिए चल पड़ा। लेकिन यह एक मानी हुई बात है कि जो काम अहंकार के साथ किया जाता है वह कभी नहीं होता। अपितु सुख तथा शांति को

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.


भी नष्ट कर देता है। रावण और वानासुर इत्यादि अहंकार के कारण ही तो नष्ट हुए हैं। बस अहंकार त्यागे बिना कोई भी काम पूरा नहीं हो सकता।

भगवान श्री विष्णु भी श्वेत शूकर का रूप धारण करके पाताल लोक की ओर ले गए। उसी दिन से संसार में श्वेत शूकर प्रसिद्ध हुए। मेरे और भगवान श्री विष्णु के इस चरित्र का जो मनुष्य प्रातःकाल ध्यान करता है। वह इस लोक में बड़े सुख और ऐश्वर्य को प्राप्त करता है।

मैं और भगवान श्री विष्णु दिव्य सहस्त्र वर्ष तक उस ज्योति पुंज का आदि व अंत खोजते रहे, परन्तु पार नहीं पा सके और हम दोनों वापस लौट आए, किन्तु जिस स्थान से चले थे, उसको भी न पा सके। उस स्थान को खोजने में ही हमको दिव्य सहस्त्र वर्ष ही लग गए। तब मैंने सोचा कि मुझको उत्पन्न करने वाला कोई और ही शक्तिमान पुरुष है।

यह विचार उठते ही हम उस ज्योतिपुंज के पास आ गए और मूर्खता के कारण उत्पन्न हुई शत्रुता का त्याग कर दिया। उसी समय आकाशवाणी हुई, "तुम दोनों ही योग करो।"

आकाशवाणी सुनकर हम दोनों ही योग करने लगे और दिव्य ज्योति को सम्बोधित करके प्रार्थना की हे महाप्रभु! आप शीघ्र ही हमें अपनी वास्तविक रूप का दर्शन दीजिए।

हमारी इस प्रार्थना को सुनने के पश्चात भगवान सदाशिव की गम्भीर वाणी सुनाई दी–ओउम्! ओउम्! तब इस शब्द को सुनकर मैंने विचार किया कि यह क्या है? उसी समय भगवान श्री विष्णु

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.



ने उस ज्योतिपुंज ( लिंग ) के दक्षिण भाग में सनातन आद्यवर्ण आकार को और उसके उत्तर भाग में उपकार को देखा। फिर मध्य में और अंत में ओउम् को देखा। यह सब सूर्यमण्डल और चन्द्रमण्डल की भाँति स्थित थे। जिनके कि आदि तथा अंत का कुछ भी पता न लगता। बस सत्य आनन्द और परब्रह्म परायण ही दृष्टिगोचर हो रहा था अब हम इस बात का बिचार कर रहे थे कि हम इसके नीचे तथा ऊपर जाकर आदि और अंत का पता लगाएं कि वहाँ पर एक परम ऋषि का अविर्भाव हो गया। उन परम ऋषि का भगवान श्री विष्णु को पता चला कि 'अकार' 'उकार' 'मकार' 'नाद' और बिन्दू का अर्थ होता है कि प्रथम अक्षर लिंग की ज्योति है। दूसरा अक्षर उकार ज्योति का मध्य है। अर्थ मात्रा नाद ज्योति का मस्तक और बिन्दू लिंग की ज्योति है इसके अतिरिक्त यह अर्थ भी होते हैं कि अकार ऋग्वेद, उकार से यजुर्वेद और मकार से सामवेद और नाद से आयुर्वेद और ब्रिन्दू से ब्रह्म विद्या का स्वरूप।

हर एक वेद ने दस अर्थों से भगवान श्री सदाशिव की स्तुति की है। ऋग्वेद रजोगुणी है, वह लिंग का दक्षिण वाला भाग है। यजुर्वेद सत्वगुणी और लिंग का मध्य भाग है और सगुण अथर्वेद का कहना है कि श्री सदाशिव [illegible] नहीं करते जो कुछ भी होता है वह शांत की इच्छा से [illegible]

ऋग्वेद की उपमा ज[illegible]की सुपन और सामवेद सुश्पल्लवी से जाती है। अथ[illegible] अवस्था मानी जाती है इसके जानने के पश्चात जप करने से ही मोक्ष की प्राप्ति होती है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.



इसलिए इस जप को तारक कहा जाता है। यह मोक्ष देने के अधिकारी हैं और इसका नाम परनव है। ओउम् के तीनों अक्षर इस परनव के अन्दर छिपे हुए हैं। तुरी जो कि अत्यन्त गोपनीय है,उसके अंगों सहित वेद उत्पन्न होते हैं। वह सबसे उत्तम है। उसी में तीनों लोक छिपे हुए हैं। उनका कभी नाश नहीं होता ब्रह्मा से लेकर कण तक उसी में लीन हो जाते हैं अव्यक्त खोजने पर शीघ्र प्राप्त नहीं होता। अठारह पुराण इसी में होते हैं। भगवान सदाशिव को वेद परनव स्वरूप कहते हैं। दक्षिण आकार से सृष्टि की उत्पत्ति, बाएं अंग से पालन और हृदय के दोनों मकार सदाशिव के शरीर मे अलंकरित हैं मस्तक आकार दायाँ नेत्र उका, दोनों कान मकार, नाक नकार, होंठ दोनों आकार तालू के वर्ग के पांच अक्षर, दायाँ पाव तोरक के अक्षर,बायाँ पाँव पकार पृष्ठ भाग कुकार दोनों पाँजर आकार कंफा मकार हृदय पोरग वीर्य को प्रकट करते हैं। ऐसे सदका केवल ध्यान करने से अत्यधिक प्रसन्नता प्राप्त होती है। मैंने और भगवान सदाशिव के स्वरूप को श्री विष्णु ने भगवान को देखा और प्रसन्नचित्त से स्तुति करना आरंभ किया।

***

## सातवाँ अध्याय

"ब्रह्माजी ने कहा, "नारद! तुम दोनों की स्तुति से प्रसन्न होकर भगवान श्री सदाशिव प्रकट हो गए। उनके पांच मुख, तीन नेत्र थे, जिनके ललाट पर चन्द्रमा, सिर पर जटाएं विराजमान थीं।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.



गौरवर्ण नेत्र, सर्वांग भस्म लपेटे, उस भुजा वाले नीलकण्ठ, भूषणों से विभूषित सुन्दर मस्तक पर भस्म त्रिपुण्ड लगाए हुए थे। उन करूणाकार महेश के वाम अंग में सुन्दर भूषणों से भूषित शक्ति शिवा विराजमान थीं भगवान श्रीसदाशिव के इस सुन्दर स्वरूप को देखकर हम दोनों गद-गद हो गए। हमारे नेत्रों से अनायास ही प्रेम-अश्रु बहने लगे। हम प्रेम में इस तरह खो गए कि हम दोनों से काफी देर तक कुछ बोला न गया। परन्तु शीघ्र ही हमने अपने आपको संभाल लिया और भगवान सदाशिव से निवेदन किया, ''भगवान! हम लोगों में मूर्खता के कारण जो शत्रुता उत्पन्न हो गई थी वह हमारे लिए कल्याणकारी ही प्रमाणित हुई है क्योंकि उसके कारण हमें आपके दर्शन प्राप्त हुए हैं। प्रभु! इस समय हमारी प्रसन्नता की कोई सीमा नहीं है॥

भगवान श्री सदाशिव की स्तुति करते हुए हम दोनों अहंभाव तथा अहंकार से रहित हो गए और दोनों ने ही भगवान सदाशिव को अपना स्वामी माना और प्रसन्नचित्त से स्तुति करते हुए उनके चरणों में नत-मस्तक हो गए।

***

## आठवाँ अध्याय

तब उन करूणाधार भगवान श्री सदाशिव ने मुस्कराते हुए कहा, हे ब्रह्मा! हमारे वचनों को ध्यानपूर्वक सुनो तुम लोगों ने मोह

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.



में फंसकर परस्पर युद्ध किया। परन्तु हमने तुम्हें अपने भक्त बनाने के लिए तुमको जान-बूझकर लड़ने नहीं दिया और अपनी ज्योति को प्रकट करके अपना परिचय दिया परंतु हम लोग जान नहीं सके। इसके पश्चात हमने लिंग स्वरूप में प्रकट होकर तुम लोगों को दर्शन दिए। तब तुमने हमें पहचाना अब तुम अहंकार व अपेक्षा को त्यागकर वह कार्य करो जिसके करने के लिए तुम लोगों को दर्शन दिए। तब तुमने हमें पहचाना अब तुम अहंकार व अपेक्षा को त्यागकर वह कार्य करो जिसके करने के लिए हम तुमको कहते हैं। ऐसा कहकर उन करूणाधर महेश ने अपनी श्वास द्वारा मुझे और भगवान श्री विष्णु को वेदों का ज्ञान प्रदान किया। पाँच मन्त्र ऐसे बताए जिनमें कि समस्त विद्याएं विद्यमान हैं। पहले हमें पुराणों की शिक्षा दी गई जिसके अक्षर वेद कहे जाते हैं। इसके पश्चात उन्होंने वेदों की माता गायत्री की व्याख्या की जिसमें 24 अक्षर वेद कहे जाते हैं। इसके पश्चात उन्होंने महामृतुंजय को शिक्षा दी फिर भक्तों के सुख देने वाली चिन्तामणि को बतलाया। इन मन्त्रों और वेदों को पढ़कर हम अत्यन्त प्रसन्न हुए। इसके पश्चात मैं और विष्णु उनके दर्शन में लीन हो गए और वह आनन्द प्राप्त हुआ जो कि कहा नहीं जा सकता। जो सुख सर्दियों में धूप से और कामी पुरूष को स्त्री प्राप्त होने से होता है। वही सुख हमें भगवान श्री सदाशिव के दर्शन करने से हुआ।

भगवान श्री सदाशिव बोले; हे श्रेष्ठ देवो! मैं तुम दोनों की भक्ति देखकर बहुत प्रसन्न हुआ। तुम ब्रह्मा! मैं तुम्हें सारी सृष्टि का स्वामी बनाता हूं। तुम प्राणियों की सृष्टि करो और हे विष्णु!

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.



तुम सृष्टि का पालन करो और वेदों को देखकर मुझे पहचानो और उचित रीति से अपने-अपने काम को करो। वेद को मेरा रूप तथा वाक्यों को मेरी आज्ञा जानो।

भगवान श्री सदाशिव की बात सुनकर हम लोगों ने कहा, ''प्रभु! आप संसार में अवतार धारण करके हमारी सहायता करें। हमें पूजन इत्यादि की विधि बताएं।''

हम लोगों की प्रार्थना सुनकर भगवान सदाशिव ने प्रसन्न होकर कहा, हर प्रकार की चिन्ता को त्यागकर तुम स्वयं सुख भोगते हुए संसार को सुखी बनाओ तुमने मेरा जो स्वरूप देखा है। उसकी पूजा करो उससे तुमको सुख की प्राप्ति होगी। इस समय जैसे मेरे लिंग रूप के पूजन से तुम लोगों का दुःख दूर हुआ है। इसी प्रकार दुखी प्राणी मेरे लिंग रूप द्वारा मेरा पूजन करके अपने दुःखों को दूर कर सकते हैं लिंग का अर्थ है संसार के लय होने का स्थान। जब भी तुम्हें किसी प्रकार का कष्ट हो तुम मेरे इस लिंग रूप की पूजा करना। मेरी पूजा करने वाले के सभी कष्ट दूर हो जाते हैं। समय आने पर मैं भी तुम्हारे संसार में प्रकट रहूंगा। मेरा नाम उस समय रूद्र अवतार होगा। मुझमें और रूद्र में भेद न जानना। सारी सृष्टि में मुझे व्यापक समझना कोई भी वस्तु मुझसे पृथक नहीं है।

इसके पश्चात भगवान श्री सदाशिव ने उस गुप्त भेद को भी हम पर प्रकट कर दिया जो कि वेदों में भी नहीं मिलता उन्होंने कहा, मैं सनातन, शिव रूप, मूलभूत, सत्य ज्ञान और अनंत हूं। इन तत्वों को जानकर सर्वदा मेरा ध्यान करना चाहिए और मेरे रूद्र रूप में तामसी गुण जानना चाहिए क्योंकि वह वैकारिक है। किन्तु

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.



वास्तव में तामसी नहीं है। अतः हे ब्राह्मण! अब तुम सृष्टि के कर्ता बनो और भगवान श्री विष्णु सृष्टि के पालक बने और मेरा रूद्र अंश जो है, वह सृष्टि का लय करने वाला होगा और यह जो उमा नाम वाली परमेश्वरी प्रकृति है उसी की शक्ति भगवान श्री विष्णु को लक्ष्मी और ब्रह्मा को वागदेवी अर्थात सरस्वती के रूप में प्राप्त होगी और उमा स्वयं प्रकट होकर महादेव को अपनाएगी। तीनों देव अपनी शक्तियों सहित मेरा पूजन करेंगे। मैं सबको चिन्ताओं से मुक्त कर दूंगा। अब तुम इन तीनों देवताओं के आयुर्बल को सुन लो। ब्रह्मा का दिन 4 हजार युग का होता है और इसी क्रम को रात को भी समझो। तीस दिन का एक महीना और बारह महीने का एक वर्ष। इस प्रमाण से ब्रह्मा जी की आयु सौ वर्ष की होती है और श्री ब्रह्मा जी का एक वर्ष भगवान श्री विष्णु का एक दिन कहलाएगा और वह भी इसी प्रमाण से सौ वर्ष तक जिएंगे तथा विष्णु का एक वर्ष रूद्र के एक दिन के बराबर होगा और इसी क्रम से भी एक वर्ष तक स्थित रहेंगे। तब मेरे( भगवान श्री सदाशिव )के मुख से एक श्वांस उत्पन्न होता है जिसमें कि छः उच्चवास और निःश्वांस का एक दिन पल, साठ पल की एक घड़ी और साठ घड़ी का एक दिन रात होता है। मेरे( भगवान श्री सदाशिव )के उच्चवांस निःश्वांस अर्थात भीतर बाहर श्वांस लेने की संख्या नहीं है। इसी कारण शिव का उत्थान अक्षय है।

ऐसा कहकर भगवान श्री सदाशिव ने हमारे सिरों पर हाथ फेरा और अन्तर्ध्यान हो गए।

***

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.



# नवाँ अध्याय

श्री ब्रह्मा जी बोले, नारद! भगवान सदाशिव जब इतना कहकर अन्तर्ध्यान हो गए तो फिर मैंने हंस का और भगवान श्री विष्णु ने बाराह का रूपधारण करके सृष्टि रचने का विचार किया। भगवान श्री विष्णु भी अन्तर्ध्यान हो गए और ब्रह्माण्ड से बाहर निकलकर बैकुण्ठ में चले गए। उनके जाने के पश्चात सबसे पहले मैंने भगवान श्री सदाशिव और श्री विष्णु का ध्यान करके जल का निर्माण किया। उस जल में फिर अंजलि जल डालकर मैंने उस जल से 24 तत्वों वाला एक अण्डा प्रकट किया जोकि विराट हो गया। उसके विराट होने से मेरे मन में संशय उत्पन्न हुआ मैं फिर बारह वर्ष तक तप करता रहा। इस तप में मैंने केवल भगवान श्रीविष्णु का ध्यान किया। बारह वर्ष के पश्चात् भगवान श्रीविष्णु ने प्रसन्न होकर मुझको साक्षात् दर्शन देकर कहा, "ब्रह्मा! वर मांगो। भगवान सदाशिव की कृपा से सब कुछ दे सकता हूं इस पर मैंने उनसे कहा, प्रभु! जो कुछ भगवान् श्रीसदाशिव का आदेश है, वही मैं आपसे माँगूंगा। निवेदन है कि यह जो चौबीस तत्वों वाला अण्ड है यह जड़ दिखाई देता है। आप इसको चेतना प्रदान कीजिए, मेरी इस प्रार्थना पर भगवान श्री विष्णु उस अखंड में प्रविष्ट हो गए। उनके उस अण्ड में प्रविष्ट करने के पश्चात् उसमें से सहस्त्रों सिर नेत्र और चरणों सहित अव्यय निकले और उन्होंने समस्त पृथ्वी को घेर लिया। भगवान श्रीविष्णु सातों लोकों के अधिपति हो गये। भगवान सदाशिव ने इनको कभी नष्ट न होने वाले कैलाश पर स्थान दिया अब मैं दृष्टि रचने लगा पहले पाप सृष्टि उत्पन्न हुई। जिसमें कि अविद्या और तम की प्रधानता थी। उससे मैंने स्थावरों

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.



की रचना की। इसके पश्चात मैंने मनुष्यों की सृष्टि की रचना के लिए भगवान श्री सदाशिव का ध्यान किया। इसके पश्चात तिरछें चलने वाले जीव उत्पन्न हुए। जब उनसे मुझे संतोष की प्राप्ति न हुई तो मैंने देवताओं की सृष्टि की। परन्तु इससे भी कार्यसिद्धि न हुई। अतः मैंने भगवान श्री सदाशिव की आज्ञा से रजोगुणी मनुष्यों को उत्पन्न किया। जब पाँच प्रकार की सृष्टि हो गई तो फिर मैंने सर्गों की रचना की। तब महत्सर्ग सूक्ष्म भौतिक सर्ग और तीसरा वैकारिक सर्ग उत्पन्न हुए। फिर आठ प्रकार की सृष्टि हुई। नवां कुमार सर्ग हुआ सनकादि,मेरे ऐसे मानसिक पुत्र थे जो कि महान वैराग्य से सम्पन्न थे। जब मैंने उनसे सृष्टि रचने के लिए कहा तो उन्होंने वैराग्य प्रकट किया। इससे मेरे क्रोध का वारपार न रहा और मारे क्रोध के मेरी आंखों से आँसू गिरने लगे। मुझे रोते-धोते देखकर भगवान श्री विष्णु ने मेरे पास आकर मुझे समझाया कि इस प्रकार रोने से काम न चलेगा। बल्कि तुम भगवान श्री सदाशिव की तपस्या करो। मैंने भगवान श्रीसदाशिव की कृपा से मेरे मन में विचार उत्पन्न हुआ कि यदि भगवान श्री सदाशिव स्वयं मेरे पुत्र बन कर अवतार धारण करें तो सृष्टि की उत्पत्ति का कार्य भली-भाँति सम्पन्न हो सकता है। यह विचार करके मैंने उग्र तप किया। जिसका परिणाम यह हुआ कि भगवान श्री सदाशिव मेरी भौंहों के मध्य से प्रकट हुए उनके मस्तक में गंगा की धारा तथा जटायें शोभा पा रही थीं। भाल में त्रिपुण्ड धारण किये हुए थे। उनके पाँच मुख और चार हाथ थे।

*:*:*

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.



# दसवाँ अध्याय

श्री ब्रह्मा जी बोले-नारद! भगवान श्री सदाशिव के उस रूप ने, जिसको कि मैं माया के वश होकर अपना पुत्र समझ रहा था मेरे पास आकर कहा- आज्ञा दीजिए! मैं आपकी तथा वेद की आज्ञानुसार कार्य के लिए तैयार हूं।

भगवान श्री सदाशिव जी के यह वचन सुनकर मैं अत्यन्त प्रसन्न हुआ। मेरी आज्ञानुसार भगवान श्री सदाशिव न भूत, प्रेत, पिशाच, कुशाण्ड,बैताल तथा ब्रह्मा राक्षसों को उत्पन्न किया। जिनको देखकर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ और मैंने उनसे कहा कि कुपुत्रों को तुम अभी नष्ट कर दो और श्रेष्ठ पुत्रों को उत्पन्न करो।

मेरी बात सुनकर भगवान श्री सदाशिव ने कहा-'नहीं! मैं ऐसी सृष्टि उत्पन्न नहीं करूँगा कि जिसको मरना जीना पड़े। उनको आप स्वयं ही उत्पन्न कीजिये उनमें से जो प्राणी चिंताओं को त्यागकर परमानंद में मग्न होंगे। उनको मैं मोक्ष प्रदान करूंगा। इस प्रकार कहकर भगवान श्री सदाशिव ने अपनी माया को खींच लिया। तब मुझे ज्ञात हुआ और फिर मैंने नत-मस्तक होकर उनको प्रणाम किया। उन्होंने उठाकर मुझे अपने कण्ठ से लगाया। उसी समय सनक आदि ने आकर उनको प्रणाम किया और स्तुति करने लगे। भगवान सदाशिव ने मुझे सतबुद्धि प्रदान की और इसके पश्चात नीललोहित भगवान शंकर अन्तर्धान हो गये और अपने लोक को चले गये।

***

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.



# ग्यारहवां अध्याय

श्री ब्रह्मा जी बोले-नारद जी! इसके पश्चात मैंने नीललोहित भगवान श्री शंकर की आज्ञानुसार शब्दादि पंच भूतों द्वारा पंची करण करके उनके स्थूल आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी समुद्र वृक्षाणि और कालादि युग पर्यन्त कालों की रचना की। तथा सृष्टि के और भी बहुत से पदार्थों की मैंने रचना की। किन्तु जब इससे मुझे संतोष न हुआ तो मैंने उमा सहित भगवान श्री शंकर का ध्यान करके अपने नेत्रों से मारीचि को हृदय से भृगु को शिर से अंगिरा को कान से मुनि श्रेष्ठ पुलह को उदान से पुलस्त्य को, समान वशिष्ठ को आपन से केतु को कानों से अत्रि को प्राण से दक्ष को और गोदी से तुम्हें ( श्री नारद जी को ) उत्पन्न किया इसके पश्चात मैंने अपने दो रूप बनाये। मैं आधे से नारी और आधे से पुरूष हुआ। नारी रूप तो शातरूप था और स्वायम्भुव मनु था। उन दोनों का परस्पर विवाह हुआ। इसके पश्चात श्री मनु जी के यहां प्रिय ब्रत और उत्तानपाद नामक दो पुत्र हुए। और आकूति, वहूति और प्रसूति नामक तीन कन्यायें हुई। बाद में आकूति का विवाह महर्षि रूचि के साथ देवहूत का महर्षि कर्दम के साथ और प्रसूति का दक्ष प्रजापति के साथ हुआ। आकूति और रूचि के यहाँ बारह पुत्र हुए। देवहूति और कर्दम के यहां बहुत से पुत्र हुए और दक्ष के यहां चौबीस कन्यायें उत्पन्न हुई। उनमें से तेरह कन्यायें यक्ष ने धर्म को दीं उनके नाम यह हैं श्रद्धा, लक्ष्मी, धृष्टि, तुष्टि, पुष्टि मेधा, क्रिया, बुद्धि, लज्जा, वसु शांति सिद्धि और कीर्ति फिर उनमें छोटी ग्यारह कन्याओं ख्यति, सत्पूथ, संमूति, स्मृति, प्रीतिं, क्षमर,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.



सन्नति, अनुसूपा, ऊर्चा, स्वाहा और स्वधा को क्रमशः भृगु भव मरीचि अंगिरी मुनि पुलह क्रतु अत्रि वशिष्ठ बहिन और पितर के साथ ब्याही जिनकी सन्तान से समस्त त्रिलोकी भर गई। फिर तो भगवान श्री सदाशिव की आज्ञा के अनुसार असंख्य जातियों की उत्पत्ति हुई और जिसमें ब्राह्मण श्रेष्ठ हुए। दक्ष की साठ कन्याओं की सन्तानों से पाताल से लेकर सत्य लोक तक यह चराचर जगत व्याप्त हो गया। और रत्ती भर भी स्थान खाली न रहा।

नारद इस तरह मैंने भगवान श्री सदाशिव की आज्ञानुसार सृष्टि की रचना की। और इस तरह भगवान श्री सदाशिव ने अपने भक्तों के उद्धार के लिए बहुत सी लीलायें कीं। जिनका बाम अंग बैकुण्ठ तथा दायां अंग मैं( ब्रह्मा )हूँ।इस प्रकार मैं विष्णु और रूद्र यह तीन गुण प्रधान हुए। सत, रज, तम तीनों गुणों में मैं प्रधान हूं। इन तीनों गुणों में से रजोगुण वाली सुरा देवी सतोगुण वाली सती और तमोगुण वाली लक्ष्मी प्रकट हुई। सती के, सती परा और शिवा( उमा )यह तीन रूप हैं। जिनमें से सती के रूप में भगवान शंकर के साथ ब्याही गई। और पिता यहां यज्ञ में अपने शरीर को त्यागकर अपने पद को प्राप्त हुई। और फिर पार्वती होकर तप करके भगवान श्री शिव जी को प्राप्त किया। कालिका, चंडिका भद्रा चामुण्डा विज्या, जया, ज्योति, भद्रकाली, दुर्गा भगवती, कामाख्या, कामदा, अम्बा, मडादी यह नाम श्री पार्वती के ही हैं। फिर तो तीनों देवियों और तीनों देवताओं ने मिलकर अनेक प्रकार की उत्तम सृष्टि की।

***

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.


# बारहवाँ अध्याय

श्री ब्रह्मा जी से यह कथा सुनकर श्री नारद जी अत्यन्त प्रसन्न हुए। उनको नमस्कार करके विनयपूर्वक कहा 'प्रभु! अब आप मुझे ब्रह्मा लोक, विष्णुलोक और शिवलोक का वृतान्त सुनाइये। ब्रंह्माजी कहने लगे- 'हे नारद! मेरे लोक का नाम सत्यलोक है। जिसकी लम्बाई सोलह करोड़ योजन है। वहाँ पर रत्नों तथा मणियों के भरे हुए स्वर्ण-मंदिर, उपवन, कुएं, तालाब और सुगन्धित पुष्पों वाली पुष्प-वाटिकायें हैं। जहां नाना प्रकार के पंछी भांति-भांति की बोलियाँ बोलते हैं भगवान विष्णु लक्ष्मी सहित अपने भक्तों को सुख देते हुए वहाँ निवास करते हैं। और सदा-सदैव भगवान सदाशिव के ध्यान में मग्न रहते हैं।

हे नारद! अब मैं उस लोक का वर्णन करता हूं। जो स्वर्ग से भी ऊपर और चिंताओं से भी मुक्त है। उसको स्वामी कार्तिक लोक कहते हैं। उसका वर्ग चौंसठ योजन है। शोक मोह तथा माया से रहित हैं वहां प्रत्येक स्थान पर आनन्द ही आनन्द है। वहाँ पर लोगों के घर रत्नों से भरे पड़े हैं। वहाँ के स्वामी, कार्तिक जी हैं। जिन्होंने तारकासुर का संहार किया है। वैसे वह भगवान श्री शिव के पुत्र हैं मगर स्वयं भी उस पद को प्राप्त हैं। षडपक्षर मंत्र का जाप करते हुए वह यहां पर भगवान सदाशिव में लीन रहते हैं। इस लोक के ऊपर शक्ति लोक है। जहाँ पर कि शक्ति रूपा जगत माता निवास करती है। उन्हीं जगतमाता श्री शक्ति की कृपा से मैंने सृष्टि की रचना की है सूर्य चन्द और इन्द्र सदा इन्हीं जगत माता के चरणों का ध्यान करते हैं। वह भगवान सदाशिव को अत्यन्त

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.


प्रिय हैं उनके अंशों से ब्रह्माणी और रमा भी उत्पन्न हुई है। स्वाहा, सुधा, सिधा, विश्वा और इन्द्राणी इत्यादि भी उन्हीं के अंश हैं। शक्तिलोक अत्यंत आकर्षक व रमणीक स्थान है। उसके कपाट मणियों के बने हुए हैं। उसका विस्तार अट्ठाईस करोड़ योजना हैं। वहाँ शक्ति और उनकी सहेलियां निवास करती हैं और शक्ति लोक के ऊपर शिवलोक है। जहाँ पर कि मोह, चिन्ता, दुःख आदि का नाम भी नहीं है। वह करोड़ों सूर्यों के समान प्रकाशमान है। यहाँ के घर मणियों से जड़े हुए हैं अप्सरायें नृत्य करती हैं। भगवान श्री शिव के निवास स्थान के निकट उनके भक्तों के भी निवास स्थान हैं। जहाँ पर कि उनके पचास हजार सेवक निवास करते हैं। वहाँ की पृथ्वी रत्नमयी है। उसका विस्तार दो सौ करोड़ योजन है। मध्य में एक बड़ा चिन्ता-हरण मन्दिर बना हुआ है जिसको देखकर मनुष्य के मन में अपने आप भक्ति उत्पन्न होती है। वहाँ पर करोड़ों सूर्य एक साथ ही प्रकाशमान होते हैं। वहाँ की दीवारें हीरों की बनी हुई हैं। खम्बे तथा किवाड़ भी मणियों के बने हुए हैं। उस मन्दिर के भीतर एक दिव्य विमान पर भगवान श्री सदाशिव विराजमान हैं जिसके स्वरूप को मैं और भगवान श्री विष्णु भी नहीं जान सके। वहाँ पर भगवान श्री विष्णु की एक शाला है, जिसका नाम धेनुलोक है। उसके स्वामी आनन्द कन्द भगवान श्रीकृष्ण चन्द्र जी महाराज हैं और राधिका रानी हैं, जो हर समय भगवान श्रीकृष्ण चन्द्र की पूजा किया करती हैं।

***

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.


# तेरहवाँ अध्याय

श्री ब्रह्मा जीं से यह कथा सुनकर श्रीनारद जी ने नमस्कार करके विनयपूर्वक कहा-ब्रह्माजी! आपने सबसे ऊपर शिवलोक का वर्णन किया है। यहां पर प्रश्न उठता है कि संसार में तो वह प्रसिद्ध है कि भगवान श्री शिव का स्थान कैलाश है। और शिवलोक को जाने वाला उस कैलाश पर्वत पर जाता है। अब मैं आपसे यह जानना चाहता हूं कि जिस भगवान सदाशिव का आपने वर्णन किया है, क्या यह वही कैलाशवासी सदाशिव हैं या कोई दूसरे हैं?

नारद जी की यह बात सुनकर श्री ब्रह्मा जी प्रसन्न होकर उनकी प्रशंसा करके कहने लगे- नारद मैं तुमसे प्रसन्न हूं। क्योंकि तुम सब कुछ जानते हुए भी संसार के कल्याण के लिए इस प्रकार प्रश्न कर रहे हो। सज्जन पुरूषों का यही काम है। अतएव मैं तुमको अब वही कथा सुनाता हूं ध्यानपूर्वक सुनो।

भगवान श्री सदाशिव पर ब्रह्मा सगुण रूप महेश्वर जिससे भगवती शक्ति जानकर उनकी अर्धांगिनी बनी और जिन्होंने उसकी सहायता से सृष्टि की रचना की है। उनके स्थान काशी आनन्द बन, ब्रह्मावन इत्यादि है। तुम्हें स्मरण होगा कि जब मैंने भगवान श्री सदाशिव से सहायता की प्रार्थना करते हुए अवतार धारण करने के लिए कहा था। तब उन्होंने मुझसे वचन लिया था कि समय आने पर ऐसा ही होगा। इसके पश्चात वह अन्तर्धान हो गये और यथा समय उन्होंने अपना वचन पूरा भी किया। मेरे मनोरथ पूर्ण करने के लिए वह कैलाश पर्वत पर आये और कठिन

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.


साधना में लग गए। वही कथा मैं अब तुमको सुनाता हूं।

कपिलपुरी में यज्ञ दत्त नाम का एक ब्राह्मण रहता था। यज्ञदत्त विघा में पारंगत था। उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम उसने गुणनिधि रक्खा। बालक बड़ा बुद्धिमान तथा चतुर था। आठ वर्ष की छोटी-सी आयु में ही उसने बहुत सी विद्यायें सीख ली थीं। परन्तु वह कुमार्ग में पड़कर अपने धर्म और कर्म से भटक गया। वह जुआरी, खेलकूद में संलग्न और गाने बजाने वालों का साथी बन गया। उसने बहुत जल्दी ही अपने पिता की कमाई लुटा दी। उसकी माता उसे रोकती थी, परन्तु प्रेम के कारण उसके सम्बन्ध में उसके पिता को कुछ न बताती थी। पुत्र चाहे कितना ही बुरा हो परन्तु माता कभी उसका बुरा नहीं चाहती।

***

## चौदहवाँ अध्याय

यज्ञदत्त जब कभी भी घर आकर अपनी पत्नी से गुणनिधि के बारे में पूछता कि इस समय गुणनिधि कहाँ है? तो वह सदा झूठ बोल देती थी और कह देती कि घर से बाहर गया हुआ है या तो वह कहीं स्नानादि कर रहा होगा या देव मन्दिर में बैठकर भगवान का पूजन कर रहा होगा। यज्ञदत्त अपने पुत्र के संबंध में इस प्रकार सदा अँधेरे में रहा। और असली भेद न जानते हुए उसने गृहसूत्र के अनुसार गुणनिधि का विवाह भी कर दिया। विवाह हो जाने के पश्चात यज्ञदत्त की पत्नी सदा पुत्र को समझाती कि तुम्हारे

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.


पिता बड़े-बड़े महात्मा हैं अतएव उसके साथ ही साथ बड़े भारी क्रोधी भी हैं। जब उनको तुम्हारे बारे में मालूम होगा तो इसके लिए तुम्हें और मुझे दोनों को दण्ड देंगे। तुम्हारा कुल बड़ा पवित्र है फिर तुम यह बुरे काम क्यों करते हो! मेरे बच्चे! तुम्हारा कल्याण इस बुरे कामों के छोड़ देने में ही है परन्तु गुणनिधि पर मां के समझाने का कुछ भी प्रभाव न पड़ता।

***

## पन्द्रहवाँ अध्याय

जब कभी भी यज्ञदत्त अपनी पत्नी से अपने पुत्र के बारे में पूछता वह बात बनाकर उसको टाल देती। आखिर कब तक एक दिन उसने अपने पिता की अंगूठी चुराकर किसी जुआरी को दे दी। जब यज्ञदत्त ने उस जुआरी से पूछा कि यह अंगूठी उसके हाथ में कैसे आई है? तो जुआरी ने यज्ञदत्त से कहा कि उसने उनकी अंगूठी नहीं चुराई किन्तु उसके यहाँ तो ऐसी बहुत सी अंगूठियाँ मौजूद हैं। क्या मेरी अंगूठी देखकर आपकी नीयत तो नहीं बिगड़ गई?

यज्ञदत्त ने जुआरी की बात सुनकर कहा- सुनो लल्ला! यह अंगूठी मेरी है और मुझे राजा के यहाँ से मिली है। तुम झूठ बोलकर इसे अपनी न बनाओ। परन्तु यह बताओ कि यह अंगूठी तुम्हारे पास कैसे आई है?

यज्ञदत्त की बात सुनकर जुआरी को क्रोध आ गया। उसने

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.


गरजकर कहा-'जो सच सुनना चाहते हो तो ध्यानपूर्वक सुनो यह अंगूठी तुम्हारे पुत्र गुणनिधि ने मेरे पास जुए में हारी है। उसने यही अंगूठी ही जुए में नहीं हारी किन्तु आज तक जुए में बहुत से साधन चुराकर हारा है। आप जितने ही सज्जन साधु धर्मात्मा हैं आपका पुत्र उतना ही बड़ा बदमाश है। देखना इस बात का है कि आप इतने बड़े विद्वान होते हुए भी आज तक अपने पुत्र की करतूतों को नहीं जान सके।

जुआरी की बात सुनकर यज्ञदत्त का मारे लज्जा के बुरा हाल हो गया। वह मारे लज्जा के मुँह ढाँपे हुए तथा सिर झुकाए हुए अपने घर पहुँचा और घर आते के साथ ही अपनी पत्नी से पूछा कि गुणनिधि कहाँ है? और वह अंगूठी कहाँ है जो कि उस दिन तूने उबटता करते मेरे हाथ से ले ली थी।

यज्ञदत्त की बात सुनकर उसकी पत्नी ने उत्तर दिया। वह अंगूठी मैंने यहीं कहीं रख दी थी। अब मुझे याद नहीं रहा कि कहाँ रक्खी थी?

स्त्री की बात सुनकर यज्ञदत्त ने कहा-'तुम झूठी हो। जब कभी मैंने तुमसे गुणनिधि के बारे में पूछा है तुमने मुझे बात बनाकर टालने की कोशिश की है। अच्छा! तुम अंगूठी की बात जाने दो और मुझे बताओ कि घर का अन्य बहुमूल्य सामान कहाँ है। न जाने मेरे किन पापों के कारण मेरे यहाँ ऐसा पुत्र उत्पन्न हुआ है। फिर जब उसने घर का दूसरा कीमती सामान देखा तो मालूम हुआ कि सभी बहुमूल्य वस्तुएँ गायब थीं। इस यज्ञदत्त ने हाथ में जल लेकर पत्नी और पुत्र को तिलाँजली दे दी और एक ब्राह्मण की कन्या

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.



से अपना दूसरा विवाह भी कर लिया।

***

## सोलहवाँ अध्याय

जब गुणनिधि को मालूम हुआ कि उसके पिता पर सारा भेद खुल गया है और उसे और उसकी मां को तिलाँजली दे दी है तो उसको बड़ा दुख हुआ वह अपनी करनी पर पछताने लगा। वह भूखा प्यासा एक शिव मंदिर के पास आकर बैठ गया। उस दिन शिव रात्रि का व्रत था। लोगों ने शिव का-पूजन किया फिर तरह-तरह के पकवान तथा खाद्य सामग्री ऊपर चढ़ाई। जब लोग भगवान का पूजन आदि करके मंदिर में ही सो गए तो गुणनिधि ने मंदिर के भीतर प्रवेश किया और खाने-पीने का सामान उठाकर बाहर की ओर भागा। मगर चलते-चलते उसका पैर एक सोते हुए शिव भक्त से टकरा गया। फिर क्या था उस भक्त से 'चोर-चोर' का शब्द सुनकर सभी लोग जाग उठे और दौड़ते हुए गुणनिधि का पीछा किया। बहुत से नागरिक भी उन भक्तों के साथ मिल गए। अंत में उन लोगों ने दौड़ते हुए गुणनिधि को पकड़ लिया और सबने मिलकर उसको ऐसा मारा कि वह मर गया। उसके मरने के साथ ही यमदूतों ने आकर उसे घेर लिया और निर्दयतापूर्वक उसे मारने लगे। उधर भगवान सदाशिव ने अपने गुणों से कहा-'यदि गुणनिधि बड़ा पापी दुराचारी और कुकर्मी है। फिर भी उसने शिवरात्रि का व्रत रखकर जाग्रत किया। हमारे पूजन को देखा है। हमारे दर्शन किए हैं। दीपक से लिंग के शरीर पर गिरती हुई छाया को इसने निवारण किया है। रात्रि में अपना वस्त्र फाड़कर उसमें बत्ती डाली

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.



है। प्रसंगवश इसने हमारे गुणों का श्रवण किया है तथा ऐसे ही और धर्म कार्य किए हैं। अत: वह हमारे लोक को आएगा और कुछ दिनों तक यहाँ रहेगा। उसके पश्चात वह क़लिंग देश का राजा होगा। तुम लोग वहाँ जाकर गुणनिधि को यमदूतों के बंधन से मुक्त करो क्योंकि हमने उसे अपना लिया है। अतएव भगवान श्री सदाशिव की आज्ञा पाकर विमान पर बैठकर, शूलधारी, उनके पार्षद भी घटनास्थल पर आन पहुँचे और बोले, ''यमराज के गणों! तुम अब इस परम धर्मात्मा ब्राह्मण को छोड़ दो क्योंकि अब इसमें कोई पाप शेष नहीं रहा।''

यमदूतों ने भगवान श्री सदाशिव पार्षदो से कहा, ''यों तो आपकी आज्ञा हमारे लिए सिर माथे पर है। मगर यह तो दुष्ट, महापापी, कुकर्मी, मांस तथा मदिरा का प्रयोग करने वाला, पर स्त्री तथा वेश्यागामी, माता-पिता की आज्ञा न मानने वाला, चोर तथा जुआरी है। हम लोग इसीलिए इसको ले जा रहे हैं।

यमदूतों की बात सुनकर शिव के पार्षद ने कहा, ''तुम मूर्ख हो। यह ब्राह्मण पापी नहीं है। इसका सबसे बड़ा धर्म तो यह है कि इसने पुराना कपड़ा जलाकर शिवालय में प्रकाश किया रात्रि भर जागरण किया। स्थिर चित्त से शिवालय के द्वार पर बैठकर इसने भगवान श्री सदाशिव के पूजन को देखा और हरि कीर्तन को सुना। इसलिए भगवान श्री सदाशिव की इच्छानुसार यह राजा बनाया जाएगा। और इस प्रकार कहने के पश्चात भगवान श्री सदाशिव के पार्षद गुणनिधि को अपने साथ ले गए।

***

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.



# सत्रहवाँ अध्याय

यमदूतों से मुक्ति पाकर गुणनिधि भगवान श्री सदाशिव के पार्षद के साथ विमान पर चढ़कर शिवलोक को गया।

यमदूतों ने जाकर सारा वृतांत यमराज से कहा। जिसे सुनकर यमराज ने कहा, "जो व्यक्ति भस्म रमाए हुए हों, रूद्राक्ष की माला धारण किए हों। शिव लिंग का पूजन करता हो, छल और श्रीसदाशिव के गुणों का गान करता हो, छल से ही सही उसके पास बिल्कुल न जाओ। दूतों से यह कहकर यमराज ने भगवान श्री सदाशिव को प्रणाम करके कहा आप इस अनजाने दोष को क्षमा कर दें।

अब गुणनिधि की कथा सुनिए–

यमदूतों से मुक्ति पाकर जब गुणनिधि श्री शिवलोक को गया तो कुछ दिन तक वहाँ सुख भोगकर वह कलिंग देश का राजा हुआ। कलिंग देश के पहले राजा का नाम इन्द्रमणि था। गुणनिधि ने उसके यहाँ अरिंदम के नाम से जन्म लिया। अरिंदम भगवान श्री सदाशिव का अनन्य भक्त था। महाराजा इन्द्रमणि अपने पुत्र में उदारता, धीरता तथा वीरता इत्यादि गुण देखकर उसे राज्य-पाठ देकर आप तप करने के लिए चले गए।

अरिंदम ने सिंहासन पर बैठने के साथ प्रजा को यह आज्ञा दी कि सब लोग शिवालयों में प्रतिदिन रात्रि को दीपक जलाया करें यदि कोई इस आज्ञा को नहीं मानेगा उसका सिर धड़ से अलग कर दिया जाएगा। इस आज्ञा से राज्य भर के समस्त शिवालय

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.



प्रकाश से जगमगा उठे। राजा अरिंदम ने अपने न्याय से प्रजा को प्रसन्न किया। दीर्घकाल तक वह राज्य का सुख भोगकर शिवलोक को गया। हे नारद! शिवजी की थोड़ी सेवा भी बहुत फलदायक प्रमाणिक हुई। यज्ञदत्त के पुत्र गुणनिधि का यह चरित्र जो सुनेगा उसकी समस्त कामनाएं पूर्ण होंगी और उसको बड़ा संतोष प्राप्त होगा अब तुम मेरे मानस पुत्र पुलस्त्य का हाल सुनो। मेरे पहले पद्म कल्प में मेरे मानस पुत्र पुलस्त्य से विश्रावा का जन्म हुआ था, जिसके यहां एक वैश्रव नाम का पुत्र हुआ था। जिसने भगवान श्री सदाशिव का उग्र तप किया उसके उग्र तप को देखकर भगवान शंकर ने प्रकट होकर उसको साक्षात दर्शन दिए। भगवान शिवशंकर को देखकर वैश्रवण ने कहा, "प्रभु! आपके अपरिमित तेज को देखकर मेरे नेत्र अपने आप बंद होते जा रहे हैं। अतः मुझको इतनी सामर्थ्य दीजिए जिससे कि मैं आपके चरणों के दर्शन कर सकूँ यह वैश्रवण यज्ञदत्त का पुत्र गुणनिधि ही था भगवान श्री सदाशिव ने गुणनिधि की भक्तिपूर्ण बात सुनकर उसके मस्तक पर हाथ फेरा और प्रभु की कृपा भरा हाथ फेरते के साथ ही गुणनिधि मे दिव्य तेज करने की शक्ति आ गई। उसने भगवान श्रीसदाशिव के साथ भगवती शिवा को देखा तो सोचने लगा कि यह गुणवती तथा रूपवती कौन है? जो अकारण ही मन को मोहित करती है। यह बड़ी सौभाग्यवती हैं जो भगवान के इतने निकट रहती है। इसके माता-पिता धन्य हैं जिन्होंने कि ऐसी रूपवती कन्या को जन्म दिया है।

इस प्रकार बार-बार विचार करते हुए राजा वैश्रवण ने

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.



भगवती शिवा को कुदृष्टि से देखा। पार्वतीजी को क्रूर दृष्टि से देखते ही उसका बायाँ नेत्र फूट गया। भगवती शिवा ने भगवान श्री सदाशिव से कहा,"यह कैसा तपस्वी और भक्त है जो कि मुझे क्रूर दृष्टि से देखता हे।"

भगवती शिवा की बात सुनकर भगवान श्री सदाशिव ने कहा,"देवी इस तपस्वी ने बड़ा उग्र तप किया है, इसलिए इसका अविश्वास करना ठीक नहीं। यह तुम्हारा पुत्र है अतः यह तुम्हें क्रूर दृष्टि से नहीं देख सकता। अपितु यह तो तुम्हारी तपस्या की सराहना कर रहा था अतः मैं इसे निधियों का स्वामी बनाऊँगा। यह गुहईयों का ईश्वर होगा।

इतना कहकर भगवान श्री सदाशिव ने वैश्रवण से कहा-वत्स! तुम क्या चाहते हो। जो इच्छा हो सो वर माँगो। मेरे आशीर्वाद से तुम वसुओं के स्वामी हो। तुम राजाओं के विद्याधरों के साथ किन्नरों के स्वामी होंगे इसके पश्चात हम तुम दोनों मित्र रूप से कैलाश पर जाकर निवास करेंगे। अब तुम भगवती शिवा के चरणों में नतमस्तक होकर क्षमा की याचना करो यह तुम पर दया करके तुमको मानसिक पाप से मुक्त कर देगी। इसके पश्चात उन्होंने भगवती श्रीशिवा से कहा, "पुत्र! देवेशि! तपस्विनी! इस अपने अंगज पुत्र पर प्रसन्न होओ।"

भगवान सदाशिव की बात सुनकर अपना क्रोध शांत किया और कहा, पुत्र! अब से तुम मेरे पुत्र हुए शिव की भाँति मैं तुम पर दयालु हूँ। अब से तुम्हारा नाम कुबेर होगा। तुम्हारा स्थापित किया हुआ यह शिवलिंग सिद्धियों का देने वाला होगा। और पूजन करने

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.



से पापों को नष्ट करके मोक्ष को देने वाला होगा। फिर भगवान श्री सदाशिव ने वैश्वेश्वर नामक स्थान में गुणनिधि या वैश्रवण को कुबेर बनाकर प्रवेश करा दिया और स्वयं उसकी अलकापुरी नामक महानगरी के समीप ही अपना कैलाश नामक स्थान नियुक्त किया।

वैश्रवण को वरदान प्रदान करके भगवती शिवा के साथ भगवान श्रीसदाशिव अर्न्तध्यान हो गए। भगवान सदाशिव की कृपा से वह अनन्त धन रत्नों के स्वामी हुए और अलकापुरी का राज्य प्राप्त करके शिव मित्र के नाम से प्रसिद्ध हुए।

हे नारद! गुणनिधि की कथा मैंने तुमको विस्तारपूर्वक सुनाई है। जो सदा आनन्द को देने वाली है और तनिक चेष्टा से महान आनन्द देने वाली है। गुणनिधि के समान पापी भी बिना इच्छा के भूखा रहने पर शिवरात्रि का व्रत करने वाला समझा गया भगवान सदाशिव के बराबर भला और कौन दयालु होगा?

***

## अठारहवाँ अध्याय

भगवान श्रीसदाशिव कुबेर को वरदान देकर जब अपने लोक में वापस पहुँचे तो विचार करने लगे कि मनुष्यों की भलाई के लिए क्या काम करें? उन्होंने निर्णय किया कि मित्र बनकर उनके पास रहें? किन्तु वहाँ मैं किस रूप में निवास करूँ? यदि मैं अपना ब्रह्ममयी शरीर त्यागकर किसी अन्य शरीर में निवास करूं तो कुबेर दोनो शरीरों में भेद और द्वैत भाव समझने लगेगा

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.



अतः मुझे अपनी इसी नाम और शक्ति से वहां जाकर निवास करना चाहिए। मैं तथा शिवा ने अभी तक कोई अवतार धारण नहीं किया। अब हम दोनों स्वयं वहाँ चलकर योग का साधन करेंगे उसी स्थान से शिवा भी अवतार धारण करेंगी। और संसार के नियमानुसार मेरी पत्नी होगी।

ऐसा विचार करके वहां से चलने का निश्चय करके भगवान सदाशिव ने अपना डमरू बजाया। डमरू के शब्द से तीनों लोकों में झंकार हो उठी उस शब्द को सुनते ही त्रिलोकवासी आश्चर्य में पड़कर उस ओर चल पड़े। भगवान श्रीविष्णु गरूड़ पर और मैं हंस पर चढ़कर चला और सनकादिक मुनिसिद्धि देवता वेद धर्म साँप इत्यादि-इत्यादि चारों तरफ से चल पड़े। भगवान श्रीसदाशिव के वह गण जो हर समय नशे में धुत्त रहते थे। सभी उसी की ओर चल पड़े। चलने वालों के मन में नाना प्रकार के विचार उठ रहे थे। कोई सोचता था कि भगवान श्रीसदाशिव के दर्शन है

इस तरह सोचकर सब लोग भगवान श्रीसदाशिव की शरण में पहुँचे और उनको दण्डवत करके हाथ जोड़कर उनके सम्मुख खड़े हो गए। भगवान श्रीसदाशिव ने भगवान श्रीविष्णु का हाथ पकड़कर अपनी दांई ओर बिठाया और मुझे( श्री ब्रह्माजी की )अपनी बांई ओर बिठाया। इसके पश्चात उन्होंने आने वालों को उचित स्थान दिया। और सबका कुशलमंगल पूछा और सबको यथा योग्य सम्मान दिया।

इसके पश्चात उन्होंने अपनी इच्छा सब पर प्रकट की और कैलाश पर चलने का विचार प्रकट किया, क्योंकि वह कुबेर से

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.



वचन कर आए थे और उन्होंने उसकी आशा को पूर्ण करना था

और जिस समय फिर भगवान श्रीसदाशिव चले तो उनके साथ सब लोग उठ खड़े हुए नन्द और सुनन्द के साथ भगवान विष्णु उठ खड़े हुए और तैंतीस करोड़ देवताओं के साथ देवराज इन्द्र भी उठ खड़े हुए ग्यारह रूद्र बारह सूर्य आठों विश्व तेरह देव सत्ताईस नक्षत्र बारह भक्ति चोंसठ योगिनी उनचास पवन दसों दिगपाल विद्याधक यज्ञ गंधर्व किन्नर अप्सरा रिद्ध सिद्धि भूत पिशाच बास्की तक्षक सर्प नागराज शेष जगमाता गायत्री गरूड़ पर्वत सातों समुद्र छः ऋतु काल यम यज्ञ नदियाँ नद और वनवासी इत्यादि भी चल पड़े।

नारद! अब सेना के विषय में सुनो-कर्ण नामक गण के साथ एक करोड़ सेना केके नामक गण के साथ दस करोड़ सेना विकृत नामक गण के साथ आठ करोड़ की सेना, प्रियात्रक के साथ नौ करोड़ विक्टानन के साथ ही नौ करोड़ जालक के साथ बारह करोड़ दुन्दवी के साथ चौदह कुन्दक दस सहेस्त्र सेना का नायक कम्पन आठ करोड़ सेना के साथ विशटस्ट भी आठ करोड़ के साथ इनके अतिरिक्त ननपति सनाद अपनी दस-दस करोड़ सेना के साथ कण्डीगण बारह करोड़ सेना के साथ महाकाल सौ करोड़ काल सौ करोड़, अग्नि सत्रह, रवि शतक कूकल अमोध इत्यादि के साथ एक-एक करोड़ काम पद और सन्तान के साथ साठ-साठ करोड़, ढीनिंग, पुरंग पूर्ण भद्र और नीम के साथ नौ करोड़ चित्रक के साथ सात करोड़ विजयी काष्टा के साथ एक करोड़ बिरूदवास और परमयुग के साथ असंख्य सेना थी इनके

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.



अतिरिक्त और भी बहुत से सेनापति थे

शिवगणों में ताज्ञ केतु श्रीदन पंचदूत भयानक लंकेश संवर तक और भृंगी इत्यादि अपने साथ एक-एक हजार भूत लिए हुए थे और दस करोड़ धूत और भी थे। लाकांत, दैत्याँत दीप और आसन देवताओं के परमप्रिय एक ही रूप वाले चौंसठ हजार थे भगरूद्र के असंख्यगण थे। उनके ललाट पर चन्द्रमा सिर पर जटा विराजमान थी। गौरववर्ण विशाल नेत्र सर्वांग भस्म लपेटे सब भूषणों से भूषित सर्वांग सुन्दर मस्तक पर त्रिपुण्ड लगाए हुए थे। उनके शरीर का प्रकाश करोड़ों सूर्यों के समान था। उनको देखकर मैं और श्री विष्णु भी आश्चर्य में पड़ गए।

भगवान श्रीसदाशिव की विशाल सेना को देखकर चारों तरफ जय-जयकार होने लगी। तब भगवान श्रीसदाशिव नन्द पर सवार हो गए उनके दाएं और बाएं और मैं और भगवान श्रीविष्णु अपनी-अपनी सवारियों पर सवार होकर चले एरावत हाथी पर सवार होकर इन्द्र तथा अन्य देवगण भी अपनी-अपनी सवारियों पर चढ़कर उनके साथ चले। चारों ओर आनन्द ही आनन्द था। भवगान श्रीसदाशिव सभी का ध्यान रखते हुए चलने लगे। मार्ग में सब स्थानों पर भगवान श्रीसदाशिव का पूजन होता था। और उन्हें तरह-तरह की भेंटें मिलती थी। चलते-चलते जब सब लोग अलकापुरी के समीप पहुँचे तब श्री कुबेर जी साज बाज सहित भगवान श्रीसदाशिव का स्वागत करने के लिए यथाविधि अतिथियों का सत्कार करने तथा भोजन की व्यवस्था करने के लिए अपनी पुरी को गए और यथा योग्य प्रबन्ध करके वापस आए

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.



और भोजन इत्यादि करवाने के पश्चात उनका यथाविधि पूजन किया और उनके चरणों में गिर गए। भगवान श्रीसदाशिव ने उनको उठाकर अपने कण्ठ से लगाया उनका हाथ पकड़ा और वहां से आगे चले।

***

## उन्नीसवाँ अध्याय

कुबेरजी के साथ-साथ भगवान सदाशिव, भगवान श्रीविष्णु मैं और अन्य सब लोग अलकापुरी में पहुँचे नगर में पहुँचकर कुबेर जी ने सबका यथा योग्य सत्कार किया।

फिर भगवान सदाशिव ने विश्वकर्मा को बुलाकर कैलाश पर्वत पर अपने भक्तों और अनुचरों के लिए स्थान बनने की आज्ञा दी। विश्वकर्मा ने अनेकों प्रकार के स्थान बना दिए। विश्वकर्मा ने भगवान श्रीसदाशिव के लिए जो स्थान बनाया था। वहाँ की भूमि नीलमणि से बनी हुई थी और मूंगे के खम्बे लगाए थे। दीवारें सुन्दर थीं और शुद्ध सुबर्ण की बनी हुई थी कुन्दन के समान दमक रही थी। उसके दरवाजे संगमरमर के बने हुए थे। भवन के मध्य में भगवान श्रीसदाशिव के बैठने के लिए जो स्थान बनाया गया था वह रत्नों से सजाया गया था।

जब भवन बनकर तैयार हो गया तो विश्वकर्मा ने भगवान श्रीसदाशिव के पास जाकर कहा, 'भगवान! आज्ञा के अनुसार स्थान तैयार हो गया है। अब मुझे क्या आज्ञा है?''

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.


यह सुनकर भगवान श्रीसदाशिव वहाँ जाने के लिए तैयार हो गए। मुझे तथा भगवन श्रीविष्णु को साथ लेकर भगवान श्रीसदाशिव वहाँ पर गए जब हम सब वहाँ पहुँचे तो महात्मा कुबेर ने भगवान श्रीसदाशिव से कहा, "प्रभु! हम सब लोगों की इच्छा है कि यहां पर आपका यथाविधि तिलक करें कृपालु भगवान श्रीसदाशिव ने श्रीकुबेरजी की प्रार्थना को स्वीकार कर लिया जिससे हम सबको बड़ा सुख प्राप्त हुआ। श्रीज्योति मुनि ने मुहूर्त का निश्चय कर भगवान श्रीविष्णु से कहा, तिलक का समय निकट है अतएव आप शीघ्रतापूर्वक काम कीजिए।

ज्योतिषमुनि की यह बात सुनकर मैं और भगवान श्रीविष्णु सदाशिव के पास गए। और उनसे प्रार्थना की कि प्रभु तिलक का समय निकट है अतः आप शीघ्रतापूर्वक स्नान कर लीजिए।"

भगवान श्रीसदाशिव ने हमारी प्रार्थना स्वीकार कर ली उसी क्षण समस्त तीर्थों का जल लाया गया मैंने तथा भगवान श्रीविष्णु ने भगवान श्रीसदाशिव को मल-मलकर स्नान करवाया और वस्त्र-भूषणादि पहनाकर रत्नजड़ित सुन्दर सिंहासन पर बैठाया। वेद ध्वनि आरम्भ हुई। घण्टा शंख और दुन्दमी बजने लगी। अप्सराएं नृत्य करने लगीं। सभी आनन्द में मस्त हो गए। सबने यथाविधि भगवान का पूजन किया और उन्हें नाना प्रकार की भेंटें दी गई। नाना प्रकार की दान-दक्षिणा दी गई। सबसे पहले महात्मा कुबेर ने भगवान श्रीसदाशिव का पूजन किया। उसके पश्चात विष्णु तथा उनके पार्षदों ने फिर ऋषि मण्डख ने। उस समय चारों तरफ से 'धन्य-धन्य' का शब्द गूंज उठा। कोई नृत्य कर रहा था।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
कोई गा रहा था। कोई स्तुति कर रहा था।

***

## बीसवाँ अध्याय

सबसे पहले भगवान श्रीविष्णु ने सदाशिव की इस प्रकार स्तुति की:-

"भगवान! आप आदि और अन्त से रहित हैं। आपकी स्तुति करने में वेद भी असमर्थ हैं। आपके प्रभाव से मैं भी प्रभावित हूं। आप घट-घट के वासी और अन्तर्यामी हैं।

इसके पश्चात तमाम मुनियों ने इस प्रकार की स्तुति सुन अपना आनन्द प्रकट किया। देवताओं की स्तुति सुन कर भगवान श्री सदाशिव ने कहा-"देवगण! मैं तुमसे बहुत प्रसन्न हूं। अपनी इच्छा अनुसार वर माँगो।"

भगवान के वचन सुनकर देवमण्डल ने कहा" आपको प्रसन्न देखकर हम सब बड़ा आनन्द प्राप्त कर रहे हैं। हमें केवल आपकी भक्ति की इच्छा हे प्रभु! आप सदैव दुष्टों से हमारी रक्षा करते रहें। वेदों ने आपको जगमाता तथा जगतपिता कहा है। इस प्रकार कहकर देवता शान्त हो गए। तब भगवान सदाशिव ने उन सबको हर तरह से तसल्ली देकर विदा किया। केवल मैं और विष्णु वहाँ रह गए। तब भगवान श्री सदाशिव ने कहा-"तुम दोनों मेरे ही अंग हो, इसलिए संसार के काम को भली-भाँति चलाओ और जब भी तुम्हें कोई संकट हो तो मुझे बताओ। और अपनी इच्छानुसार

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.


वर माँगो।

मैंने और भगवान श्री विष्णु ने भक्ति का वर मांगा। इसके पश्चात भगवान श्रीसदाशिव ने कुबेर का हाथ पकड़कर उनसे कहा- "हम तुम्हारे प्रेम के कारण यहाँ से आए हैं। हमारी और तुम्हारी मित्रता भी संसार में सबको मालूम हो गई हे। बस अब तुम भी अपने लोक को जाओ।

महात्मा कुबेर भगवान श्री सदाशिव की बात सुनकर गद्गद् हो गए। प्रेम के कारण उनके नेत्रों से जल बहने लगा। भगवान सदाशिव की आज्ञा को पाकर यह अपने लोक को चले गए। कभी-कभी मृत्युलोक में भी आकर जीवों का निरीक्षण भी कर लिया करते थे और कैलाश पर नाना प्रकार के जप और तप इत्यादि करते थे।

***

# दूसरा भाग

## पहला अध्याय

श्री ब्रह्मा जी बोले– "हे नारद! सबसे पहले मैंने भृगु, भव,मारीच अंगिरा मुनि, बहिन और पितर को उत्पन्न किया और सृष्टि बढ़ाने के लिए कहा मैंने अपने नेत्रों से मारिचि को, हृदय से भृगु को शिर से अंगिरा को, और कान से मुनिश्रेष्ठ पुलह को,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.


उदान से पुलस्त्य को समान से वशिष्ठ को, अपान से ऋतु को, कानों से अत्रि को, प्राण से दक्ष को और गोदी से तुम( देवर्षि नारद ) को और अपनी छाया से कर्दम मुनि को उत्पन्न किया। इसके पश्चात मैंने हृदय से धर्म को पीठ से अधर्म को, होंठ से मोह को और भौंहों से क्रोध को उत्पन्न किया। इसके पश्चात मैंने सरस्वती को उत्पन्न किया जिसको कि देखकर ही काम से पीड़ित हो गया और उसके साथ रत्ती की इच्छा करने लगा क्योंकि वह तीनों लोकों को मोहित करने की शक्ति रखती थी, मेरे पुत्र मुझे इस अवस्था में देख मुझ पर हंसने लगे और भगवान श्रीसदाशिव की स्तुति करने लगे, ताकि मैं इस घोर पाप से जाऊं।

मेरे पुत्रों की प्रार्थना पर कृपालु व दयालु भगवान श्रीसदाशिव ने प्रकट होकर मुझे समझाकर इस पाप से बचा लिया। भगवान यथा समय इसी प्रकार अपने भक्तों की रक्षा किया करते हैं।

मैं पाप से बच गया लेकिन मोहवश होकर भगवान सदाशिव की निन्दा करने लगा।

इसके पश्चात मैंने अपने मुख से संध्या नामक एक कन्या उत्पन्न की उस कन्या के समान तीनों लोक में कोई भी सुन्दर न था, उसके मस्तक पर काली घटा के समान बाल लहरा रहे थे। शुक की भाँति नाक, कमल जैसे नयन, लाली लिए हुए सुन्दर व पतले-पतले होंठ, अनार के दानों के समान सुन्दर दांत, अनुपम ठोढ़ी, तीन सुन्दर रेखाओं वाला गला, नाना प्रकार के आभूषण पहिने हुए बाजूबन्द तथा रत्नजड़ित अंगूठियाँ पहिने हुए पतली-पतली अंगुलियाँ, कदली समान जाँघें, घुंघरूओं से युक्त चरण,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.


गंभीर नाभि, पतली कमर बलखाती हुआ पेट चरण, नख और शरदचन्द्र के समान मुख मण्डल इत्यादि। एक-एक अंग उसका आकर्षक तथा मनोहर। ऐसी गजगामिनी को देखकर मैं अपने आपको संभाल न सका और मोहित हो गया और काम से पीड़ित होकर मैं उसकी ओर आकृष्ट होने लगा। मैं बुद्धिहीन उसकी रूपरेखा पर मोहित होकर अपने अनेकों प्रकार के विचार अपने मन में लेकर धीरे-धीरे उसकी ओर बढ़ने लगा। इतने में एक विलक्षण रूप वाला पुरूष जिसके बाल काले थे, स्थूल काया वाला, नीले तथा सुन्दर वस्त्र पहने आविर्भूत हो गया उसके श्वांस से सुगन्धि निकल रही थी और वह परम श्रृंगारित था ऐसा मेरा पुत्र दोनों हाथ जोड़कर तथा सिर झुकाकर मेरे सम्मुख खड़ा हो गया उसने मुझसे पूछा-प्रभु! मुझे मेरा नाम तथा काम बताइए?''

उस सुन्दर पुरूष की बात सुनकर मेरे आश्चर्य की सीमा न रही। मैंने कहा- वत्स! मैं तुम्हारा मनमथ रखता हूं। इसके अतिरिक्त मथन काम मदन इत्यादि भी तुम्हारे नाम हैं, तुम अपने बाणों और सौन्दर्य के द्वारा सबको बस में कर सकोगे तुम लोगों आश्चर्य सदैव सुख का लक्ष्य और नित्य ही प्राणियों में मंद उत्पन्न हुआ करेगा और तुम इसी प्रकार सृष्टि के अवर्त्तक बनो।''

इस प्रकार का वर देकर मैंने उनका सम्मान बढ़ाया और अहंकार में भरकर अपने सिंहासन पर बैठ गया और अपने सभी पुत्रों से कहा-देखो कामदेव का पद सबसे ऊंचा है।

मेरी यह बात सुनकर काम ने धनुष पर वह बाण चढ़ाया कि उससे सभी की बुद्धि नष्ट हो गई। धनुष को कान तक खींचकर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.


वह विचार करने लगा कि पितामह के वरदान की परीक्षा करनी चाहिए। इस प्रकार सोचकर उसने मोहन नाम का बाण मुझ पर छोड़ दिया। साथ-ही-साथ उसने हर्षण रोचन मोहन शोषण और भाण इन पांच बाणों को मुनियों पर चला दिया। संध्या पर इन बाणों का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। यह देखकर कामदेव ने उस पर भी अपना एक बाण छोड़ा। जिससे संध्या में भी विकार आ गया। वह भी काम के वश में हो गई। उसके शरीर में रोमांच होने लगा। जमाहियां आने लगी और चौंसठ कलासों का प्रयोग करके वह अपने अंगों को संचालित करने लगी हमारे सन में भी विकार उत्पन्न हो चुका था। एक प्रजापति ने भी उसकी इच्छा की मारिचि अत्रि और दक्षादि सब महर्षि इन्द्रियों के विकार को उत्पन्न हो गए। हम सबको काम से पीड़ित देखकर कामदेव को अपने कर्म तथा बाणों में विश्वास हो गया।''

***

## दूसरा अध्याय

श्री ब्रह्मा जी बोले-नारद जी! हम पिता पुत्रों की संध्या पर बुरी तरह से मोहित देखकर सत्य और धर्म बड़े घबराये और वह धर्म रक्षक भगवान श्री सदाशिव मुझे देखकर हंसे और मुझको लज्जित करते हुए बोले हे ब्राह्मण! तुम्हें अपनी पुत्री को देखकर काम कैसे प्रकट हो गया। यह वेद मार्ग पर चलने वालों को उचित नहीं। क्या यह महापाप नहीं है? पुत्री पुत्र की बहू माता के साथ भोग करने वाला घोर नरक में डाला जाता है। खेद है कि तुम वेद पाठी होकर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.


इस बात को भूल गये और लज्जा को त्यागकर अपना धर्म नष्ट कर दिया। मैंने और भी बहुत से कामी पुरूष देखे हैं मगर तुम तो सबसे बढ़ गये हो। तुम्हारे वेदपाठी और त्रानी होने पर हजार बार धिक्कार है नारद जी! मुझे इस प्रकार धिक्कारने के पश्चात भगवान श्री सदाशिव मेरे पुत्रों की ओर आकृष्ट हुए और बोले-अरे तुम जैसे एकान्त योगियों का चित्त कैसे मलिन हो गया। हां! जिनके चित्त को स्त्रियां हर लेती हैं उनसे भला सत्संग की आशा कैसे की जा सकती है। हे वेदपाठी धर्मयज्ञ ऋषियों! तुम इस प्रकार कामी पुरूष तो सदा धिक्कारने के योग्य होता है। खेद है कि ब्रह्मा के पुत्र होकर तुमने इस प्रकार बुरे काम को अपनाया। तुम लोगों को बार-बार धिक्कार है।

नारद जी! भगवान श्री सदाशिव के उन शब्दों से मेरा बड़ा बुरा हाल हुआ। मारे भय और लज्जा के मेरे शरीर से पसीना चूने लगा। मेरे जो विकार उत्पन्न हुआ था वह भगवान श्री सदाशिव की बातों में जाता रहा। मेरे शरीर से जो पसीना चुआ उससे चौंसठ हजार अग्निस्त्राता पितृगण उत्पन्न हो गए और छियासी हजार वर्हिषद पितृ हुए। दक्ष के शरीर से जो पसीना गिरा उससे एक सुन्दर कामिनी उत्पन्न हुई। जिसको आज संसार रती के नाम से जानता है उसको देखकर ऋतु आदि भी स्खलित हो गए। उनसे जो वीर्य भूमि पर गिरा, उससे अन्य पितरों की उत्पत्ति हुई। इतने मे भगवान सदाशिव अर्न्तध्यान हो गए और मैंने क्रोध भरी दृष्टि से देखा और उस को शाप देना चाहा। मुझे शाप देने के लिए तैयार देखकर सारे पितरों ने मुझे समझाया और शाप देने से रोका। परन्तु मारे

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.



क्रोध के मेरा बुरा हाल था। मैंने उनसे कहा-"मूर्ख तूने अपने पिता के साथ ही ऐसा बुरा बर्ताव किया? अत:जैसे तूने किया वैसे ही तू भोगेगा। तूने भगवान श्री सदाशिव के सामने मुझे लज्जित किया है। अत: मैं तुझको शाप देता हूं कि तू कामदेव के बाणों से भस्म हो तभी तुझे सुख मिलेगा।

यह सुनकर कामदेव बुरी तरह से कांपने लगा। सारा गर्व चूर-चूर हो गया और वह हाथ जोड़कर कहने लगा-'भगवन! आप तो न्याय का अनुसरण करने वाले हैं। तब फिर आपने मुझे शाप क्यों दे दिया? आपने कहा था (श्री ब्रह्माजी) श्रीविष्णु और श्री सदाशिव सभी तुम्हारे वश में होंगे। जो कुछ आपने कहा था मैंने तो उसकी परीक्षा करने के लिए किया था। हे जगत पिता! मेरा कोई दोष नहीं है। अतः आप मुझे शाप से मुक्त कर देवें।

श्री ब्रह्मा जी बोले-"हे नारद! कामदेव ने जब इस प्रकार नर्म होकर मेरी स्तुति की तो मैंने कहा:-

"मेरा शाप तो झूठा नहीं हो सकता। अतएव जब भगवान सदाशिव अपना विवाह करेंगे तब तुम्हारा दोबारा जन्म होगा इतना कहकर मैं चुप हो गया और मुनि और कामदेव भी अपने स्थान को चले गए।"

***

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.



# तीसरा अध्याय

नारद जी ने कहा-"प्रभु ! इसके पश्चात क्या हुआ?"

श्री ब्रह्मा जी बोले-"नारद! इतना कुछ होने पर भी भगवान सदाशिव के विरूद्ध मेरे मन में जो द्वेष उत्पन्न हो चुका था उसको मैं किसी प्रकार भी दूर न कर सका। इसको भी तुम शिव की माया ही कह सकते हो। मैंने अपने पुत्र दत्त को बुलाकर कहा कि अपने पसीने से उत्पन्न हुई कन्या रती का विवाह कामदेव से कर दो। इस पर दक्ष ने कामदेव से कहा-"हे कन्दर्प! तुम्हारे ही समान गुणवाली मेरी पुत्री को पत्नी के रूप में ग्रहण करो।

यह कह दक्ष ने अपनी रती नामक सुन्दर कन्या का विवाह कामदेव के साथ कर दिया। विवाह के समय सुखवर्द्धक महान उत्सव हुआ। अपनी पुत्री तथा जमाता को सुखी देखकर दक्ष भी अत्यंत प्रसन्न थे।

जैसे मैं कह चुका हूं। मेरे हृदय में द्वेष की अग्नि जल रही थी। मुझे माया ने दबा लिया और मैंने अहंकार में भरकर दक्ष से कहा,"हे दक्ष! भगवान सदाशिव तीनों लोकों के स्वामी स्त्रियों से रहित, भोग-विलास को त्यागकर सदैव प्रसन्न रहते हैं और संसार के बंधनों से मुक्त होकर योगियों के समान जीवन व्यतीत करते हैं। उनको अपनी इन्द्रियों पर हम लोगों का अपमान किया है। अतः हम लोगों को भी वही काम करना चाहिए जिससे कि उनके मन में विकार उत्पन्न हो। इसलिए अब तुम उपाय करो कि भगवान सदाशिव अपना विवाह करें। जब तक यह काम न होगा मेरी चिंता न मिटेगी। मेरे पुत्र होकर भी अपने को सबसे बड़ा

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.



समझकर मेरी बेइज्जती करने लगे। यदि विष्णु ऐसा करते तो मुझे कभी भी इतना दुःख न होता। इसलिए जब तक सदाशिव अपना विवाह न कर लेंगे मुझे चैन न पड़ेगा मैंने यह बात दक्ष से कही थी कि वहाँ कामदेव की अत्यधिक प्रशंसा करके उससे कहा, "वत्स! अब तुम जगत के हितार्थ भगवान सदाशिव को अपने वश में करो और अपना प्रताप दिखाओ। ऐसा करने से तीनों लोकों में तुम्हारा अधिकार हो जाएगा। यह काम तुम्हारे अतिरिक्त और कोई नहीं कर सकता। इसमें लाभ ही लाभ है। ऐसा करने से तुम्हारा मन शांत भी हो जाएगा और स्त्री अनुराग होने से श्रीसदाशिव तुम्हें वर भी देंगे।

कामदेव बोला, "प्रभु! आपका कहना सिर आँखों पर। परन्तु भगवान सदाशिव को मोहित करने के लिए स्त्री कहां से आएगी उसका निर्माण तो आपको ही करना होगा। उसी समय मेरे श्वांस से बसन्त उत्पन्न हुआ। उसके उत्पन्न होने के साथ ही मंद-मंद शीतल पवन चलने लगी। चिड़िया चहचहाने लगीं, कोकिला व भंवरे सात स्वरों में गाने लगे। भंवरे फूलों पर गुंजारने लगे, बसन्त की रूप राशि का क्या कहना, पुष्पित काँति पुष्पित ताम्र रस्से नेत्र संध्या के उचित चन्द्र खण्ड-सा मुख और सुन्दर नारिका मैंने कामदेव से कहा, "कामदेव! इस मनुष्य का नाम बसन्त है। यह लोकों को रंजित करने वाला है। अब तुम बसंत तथा अपने सहचरों को साथ लेकर भगवान सदाशिव को मोहित करने के लिए और भगवान श्रीसदाशिव के स्थान की ओर चल दिया।

***

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.



# चौथा अध्याय

श्री ब्रह्मा जी बोले,"नारद जी! मेरी आज्ञा पाकर कामदेव अपने बसन्त आदि सहचरों सहित रति को साथ लेकर भगवान श्रीशिव जी के स्थान पर पहुँचा कामदेव की माया से सब जीव मोहित नहीं कर सका। उसका प्रत्येक यत्न व्यर्थ प्रमाणित हुआ और वह दुखी होकर बसन्त आदि सहचरों सहित रति को साथ लेकर मेरे पास वापस लौट आया और हाथ जोड़कर कहने लगा "प्रभु मैंने अपने प्रभाव से तीनों लोकों को मोहित कर डाला। मगर भगवान श्री महादेव पर मैं अपना कोई प्रभाव न डाल सका। उनकी समाधि को भंग करने में असफल रहा। मुझे तो यह डर है कि कहीं भगवान सदाशिव मुझे अपनी क्रोधाग्नि से भस्म ही न कर डालें, आप यह कार्य किसी दूसरे को सौंप दीजिए।

कामदेव की बात सुनकर मैं दुखी हो गया और मेरे मुख से दुख के कारण तीव्र गति से श्वांस निकलने लगा। मेरे इस तीव्र श्वांस से बहुत से बली गण उत्पन्न होकर मारो-मारो काटों-कांटों का शोर मचाने लगे। यह विचित्र वरण तथा विचित्र प्रकृति वाले बुरी तरह से शोर मचा रहे थे और अनेकों वाद्यों को बजा रहे थे। उन भयंकर प्रकृति वालों की आकृति को देखकर अनायास ही भय उत्पन्न होता था।

कामदेव ने पूछा-"प्रभु यह कौन है?

मैंने कहा-"इनके अंदर मार है और इनका नाम भी मार है।

कामदेव ने कहा-"प्रभु! यह क्या करेंगे और कहां रहेंगे?

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.



मैंने कहा-"यह सदा तुम्हारे साथ रहेंगे। तुम्हारी सहायता करना ही इनका काम होगा। इनका मुख्य कार्य होगा ज्ञानियों के ज्ञान मार्ग में बाधा डालना।"

मेरी बात सुनकर कामदेव और रति को तनिक संतोष हुआ।

मैंने कहा-"कामदेव तुम अपने सहचरों के साथ अब की बार इन मारो को भीं साथ कर भगवान श्री सदाशिव के स्थान पर जाओ और भगवान पर अपना प्रभाव डालो।

कामदेव ने कहा-"प्रजा नाथ! आपकी आज्ञानुसार मैं अवश्य जाऊँगा और शायद इन मारों के कारण मैं संभल भी हो जाऊँ। परन्तु फिर भी डरता हूं कि मेरी इस धृष्टता को देखकर भगवान सदाशिव कहीं मुझे भस्म ही न कर डालें।

इतना कहकर कामदेव, रति, बसन्त और मारगणों को साथ लेकर दोबारा भगवान श्री सदाशिव के स्थान पर गया। और वहाँ जाकर उसने, उसके साथियों से जो कुछ भी भगवान श्री सदाशिव को मोहित करने के लिए भी हो सका। लाख चेष्टा करने पर भी वह भगवान सदाशिव को मोहित न कर सका। इस पर निराश होकर अपने सहचरों सहित एक बार फिर मेरे पास लौट आया और मुझसे कहने लगा-"पिताजी! आप भगवान श्री सदाशिव के विवाह की कोई और ही व्यवस्था कीजिए। मैं उनको मोहित न कर सका और शायद कर भी न सकूं। इतना कहकर वह मुझको प्रणाम करके वहां से चला गया।

※※※

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.



# पांचवाँ अध्याय

कामदेव तो चला गया लेकिन मैं पूर्ववत श्री महादेव जी को मोहित करने के संबंध में सोच रहा था। मेरा यह अहं कि कामदेव द्वारा मैं यह कार्य करवा लूंगा अब चूर-चूर हो चुका था। अब मैंने भगवान श्री विष्णु का ध्यान किया और उनको इस प्रकार कहने लगा-"भगवान आप मुझे अपना सेवक समझकर मेरे दुखों का अंत कीजिए। हे भक्त वत्सल! आप अपने भक्तों का दुख हरने के लिए ही तो अवतार धारण करते हैं। अतः आप मुझ पर कृपा करके मुझे दर्शन देवें और मेरे दुखों को दूर करें?"

मेरी इस स्तुति को सुनकर पीताम्बर धारी भगवान श्रीविष्णु तुरंत प्रकट हो गए। मैंने उनका यथायोग्य स्वागत किया भगवान ने चारों तरफ अपनी मुस्कराहटें बिखेरते हुए कहा-"ब्राह्मण! कहो तुम्हें मुझसे कौन-सा ऐसा काम आन पड़ा है जिसके लिए तुमने मुझे स्मरण किया है?"

इस पर मैंने भगवान श्रीविष्णु को हुई बीती सब की सब सुना दी।

मेरी बात सुनकर भगवान श्रीविष्णु ने कहकहा लगाया और कहने लगे-

'तुम्हें अपनी कन्या को देखकर मोह उत्पन्न हो गया था और तुमने उसको कुदृष्टि से देखा था। तब उस समय भगवान श्री सदाशिव ने आकर तुम्हें और तुम्हारे पुत्रों को धिक्कारा था और तुम्हारे पुत्रों के समक्ष तुम्हारी निन्दा भी की थी मगर ऐसा उन्होंने

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.



क्यों किया था। तुमने इस पर भी विचार किया है क्या? वह तो तुम्हें अपना पुत्र जानकर तुम्हारी भलाई के लिए ही तुम्हें सदउपदेश करने के लिए आए थे। लेकिन तुमने अपनी अल्पबुद्धि के कारण उनके सदउपदेशों की ओर ध्यान नहीं दिया। तुम सब लोकों के कर्ता होकर और वेदवक्त ऐसी मूढ़मती वाले क्यों हो गए हो? हाँ! तुम ने वेदों के पाठ को सुना दिया है यही कारण है कि तुम ब्रह्मरूप भगवान सदाशिव के साथ शत्रुता करना चाहते हो समस्त देवता उनका पानी भरते हैं और उनके सेवक हैं। वह आदि, मध्य और अन्त से रहित हैं। वह भूत, वर्तमान तथा भविष्य तीनों कालों का हाल जानने वाले हैं। वह भक्त वत्सल हैं और सदादेव अपने भक्तों पर कृपा करने वाले हैं यदि तुम भगवान श्री सदाशिव को स्त्री ग्रहण किये हुए देखना चाहते हो तो इसके लिए तुमको उद्देश्य की पूर्ति करने के लिए भगवती उमा का ध्यान करो। यदि भगवती प्रसन्न हो जायेंगी तो तुम्हारे सब काम पूर्ण हो जायेंगे। भगवती पार्वती अवतार लेकर किसी की कन्या हो जायेंगी और फिर उनका भगवान सदाशिव का विवाह हो जायेगा। इसके लिए तुम्हें दक्ष को भी तप करने के लिए तैयार करना चाहिए। उसके तप करने से भगवती पार्वती उनके यहाँ जन्म लेंगी। भगवती उमा को ही सदाशिव पत्नी के रूप में ग्रहण करके भक्तों के दुखों का अन्त करेंगे। बस यही एक विधि है जिससे कि तुम भगवान सदाशिव जी को विवाहित देख सकते हो।

इतना कहकर पीताम्बरधारी, चतुर्भज भगवान श्री विष्णु अन्तर्ध्यान हो गया।

***

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.



# छठा अध्याय

श्री ब्रह्मा जी बोले-'नारद जी! भगवान विष्णु के आदेशानुसार मैंने भगवान श्री सदाशिव से वैर-भाव त्याग दिया। मैं समझ गया कि भगवान श्री विष्णु जो कुछ मैंने विचार किया था वह सब गलत है, अतः मैंने दक्ष को बुला भेजा जब वह आये तो मैंने उनसे कहा-"दक्ष! मुझे वैसे भगवान सदाशिव से ईर्ष्या थी इसलिए मैंने कामदेव और रति को उनके मोहित करने के वास्ते उनके स्थान पर भेजा, कामदेव ने उनके स्थान पर जाकर उनको मोहित करने के लिए अनेकों प्रकार के यत्न किये जिससे कि सब जीव मोहित हो गये मगर शिवजी वश में न आये, उनके सारे प्रयत्न व्यर्थ हो गए, मैंने उसे दोबारा मारगणों के साथ श्री सदाशिव के पास भेजा,मगर परमात्मा शिव मोहित न हुए और वह निराश होकर वापस लौट आया,कामदेव तो निराश हो गया लेकिन मैं निराश न हो सका। मैंने जब भगवान सदाशिव को मोहित करने का उपाय न देखा तो अपनी सहायता करने के लिए भगवान श्रीविष्णु की स्तुति की। मेरे स्तुति करने पर करूणेश विष्णु ने मुझे साक्षात दर्शन दिए और मैंने फिर अपना सारा दुख उनके सामने रखा, मेरी बात सुनकर भगवान श्री सदाशिव को विवाहित देखना चाहते हो तो यह बात ठीक नहीं है, उन्होंने तो तुम्हें अपना पुत्र जानकर तुमको सद्उपदेश दिया। मगर तुमने उनके सद्उपदेश पर ध्यान नहीं दिया हा! तुमने वेदों के पाठ को ही भुला दिया है तुम उस ब्रह्म-स्वरूप भगवान के साथ शत्रुता करना चाहते हो जिनके कि सब देवता पूजन करते हैं और जिनके कि सब देवता सेवक हैं। यदि तुम

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.



भगवान सदाशिव को विवाहित देखना चाहते हो तो इसके लिए तुम्हें उग्र तप करना चाहिए, भगवान श्री सदाशिव के साथ-साथ अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए भगवती शिवा का भी ध्यान करना चाहिए। इससे पार्वती इस लोक में किसी की कन्या हो जायेंगी और फिर उनसे सदाशिव का विवाह हो जायेगा, तुम दक्ष को तप करने के लिए कहो क्योंकि उमा उन्हीं के यहाँ पुत्री बनकर आयेंगी, सो हे दक्षजी! अब तुम एक ऐसी पुत्री को जन्म दो जो भगवान सदाशिव की पत्नी बने। तुम समस्त लोगों में सम्मान के योग्य बनो। अब तुम्हारे लिए यही उचित है कि तुम शंम्भू प्रिय देवी दुर्गा की उपासना करो, और जब वह तुम्हें दर्शन देवें और वर मांगने के लिए कहें तो तुम उनसे यह वर मांगना-"आप मेरी पुत्री हों।"

मैं भी तप करने जाता हूँ,और मैं भी यही वर माँगूंगा। भगवती की महिमा का पार किसी ने नहीं पाया। जब भगवान सदाशिव ने हमें उत्पन्न किया था,तो उस समय मेरी और भगवान सदाशिव की प्रार्थना पर उन्होंने कहा था कि 'हर' नाम धारण करके अवतार धारण करेंगे और सभी सांसारिक कामों को संपूर्ण करेंगे, हमारी आदि शक्ति जिनका कि एक अंश श्री लक्ष्मी जी हैं अवतार धारण करके हमारी पत्नी बनेंगी।"

दक्ष जी! इस संसार की उत्पत्ति इन आदि शक्ति द्वारा ही हुई है। वही सबकी माता हैं। वही अब सती नाम धारण करके तुम्हारे यहाँ जन्म लेंगी, इसलिए अब तुम ऐसा उपाय करो जिससे कि आदि शक्ति का अवतार तुम्हारे घर में हो, इसके पश्चात श्रीदक्ष मेरे आदेशानुसार मन्दिराचल पर्वत पर तप करने के लिए चले गए।

***

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

# सातवाँ अध्याय

श्री ब्रह्मा जी बोले-''नारद! जब दक्ष तप करने के लिए मन्दिराचल पर्वत पर चले गए तो मैंने भी कठिन व्रत धारण करके श्री जगदम्बा का ध्यान किया। और स्वयं स्तुति निर्माण करके उनको सुनाई जगदम्बा प्रसन्न होकर प्रकट हुई।

जगदम्बा के श्री अंगों की कांति उदयकाल के सहस्त्रों सूर्यो के समान थी। वह अपने दस हाथों में खंग, चक्र, गदा बाण, धनुष, परिध, शूल भुशण्डि मस्तक और शंख धारण किए हुए थीं। उनके तीन नेत्र थे, वह समस्त अंगों में दिव्य आभूषणों से विभूषित थीं।

मैंने उनके दर्शन किए। नतमस्तक होकर उनको प्रणाम किया और स्तुति करके उनको प्रसन्न किया।

''हे ब्राह्मण! तुमने किस उद्देश्य के लिए मेरी स्तुति की है। शीघ्र कहो।''

इस पर मैंने हाथ जोड़कर कहा-''मातेश्वरी रूद्र नामक भगवान सदाशिव ने मेरा अपमान किया हे। मेरी कामना है कि आप सती का रूप धारण करके मद को चूर्ण करें। आप दक्ष की कन्या बनकर भगवान श्री सदाशिव को मोहित करें। भगवती आपको छोड़कर मुझमें, विष्णु में या किसी ओर में उनको मोहने की शक्ति नहीं है। आपको कन्या रूप में प्राप्त करने के लिए दक्ष मन्दिराचल पर्वत पर उग्र तप कर रहे हैं।''

मेरे इस प्रकार कहने पर भगवती आश्चर्य में पड़ गयीं और चिंतित हो गयीं। उन्होंने कहा-''यह आज तुम कैंसी बातें कर रहे

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हो? ब्रह्मा और भगवान श्री सदाशिव के मोहने का भाव? और इसके लिए मुझसे सहायता! जो कुछ तुम कर रहे हो यह भगवान श्री सदाशिव की निन्दा है। यह तुम्हारी भूल है। सभी जानते हैं कि मैं भगवान श्री सदाशिव के विरूद्ध कुछ भी नहीं कर सकती। तुम ही कहो भला निर्विकल्प भगवान शंकर को मोहित करने से तुम्हें क्या लाभ होगा मैं तो उनकी एक तुच्छ दासी हूं। उन्होंने भक्तों का उद्धार करने के लिए रूद्र अवतार धारण किया। भगवान श्री सदाशिव तीनों लोकों के स्वामी हैं। तुम्हारे( श्री ब्रह्मा जी के )और श्री विष्णु जी के भी स्वामी हैं। योग में भी वह तुम दोनों से बढ़कर हैं। मैं विस्मित हूं कि यह विमूढ़ता तुममें कहाँ से आ गई? माया के स्वामी ब्रह्मा को मोहना चाहता है, आश्चर्य है।

इतना कहकर देवी ध्यानावस्था में हो गयीं। उसी अवस्था में उनको भगवान श्री सदाशिव की ओर से आज्ञा हुई कि मेरी इच्छा के बिना कोई कार्य नहीं हो सकता। मेरी ही इच्छा से श्री ब्रह्मा और दक्ष तप कर रहे हैं, तुम उनको वरदान देकर दक्ष प्रजापति के यहाँ अवतार धारण करो मैं तुम्हें ग्रहण करूँगा।

भगवान श्री सदाशिव की आज्ञा पाकर देवी भगवती ने श्री ब्रह्मा जी से कहा-"अच्छी बात है। मैं इसका प्रयत्न करूंगी कि शिवजी जिससे मोहित होकर स्वयं दूसरा विवाह कर लेवें, शंकर जी को मोहने वाली इस संसार में कोई नहीं है, मैं भी इस की क्षमता नहीं रखती, उनको मोहित करना मेरी शक्ति से बाहर है तो भी मैं उनको मोहित करने की चेष्टा करूंगी।

इतना कहकर जगदम्बा अन्तर्ध्यान हो गयीं और मैंने जाकर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.


यह शुभ समाचार अपने पुत्रों को सुनाया।

***

## आठवाँ अध्याय

नारद जी ने पूछा-''प्रभु! फिर क्या हुआ?''

ब्रह्मा जी बोले-'' भगवती जिस समय मुझे वर देकर अन्तर्ध्यान हो गई उस समय दक्ष प्रजापति मंदिराचल पर्वत पर उग्र तप कर रहे थे, वह पूरे तीन सहस्त्र वर्षों तक करते रहे, वह गर्मी के दिनों से पांच अग्नि तप कर और शीतकाल में तल में प्रविष्ट होकर तप करते रहे अपने तप के बीच में उन्होंने प्राणायामों की सिद्धि प्राप्त कर ली, भगवती ने प्रसन्न होकर दक्ष प्रजापति को प्रत्यक्ष दर्शन दिए। भगवती शिव सब कुछ जानती थीं, उन्होंने दक्ष प्रजापति से कहा-मैं तुम्हारी तपस्या से अत्यधिक प्रसन्न हूं। अतः वर मांगो।

दक्ष प्रजापति ने हाथ जोड़कर कहा-''देवी! यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो मेरे घर में मेरी पुत्री बनकर जन्म लीजिए, दूसरे स्वामी भगवान सदाशिव ने रूद्र नाम से ब्रह्मा के पुत्र के रूप में अवतार धारण किया है और! देवी आपका अभी तक अवतार नहीं हुआ है। अब प्रश्न उठता है कि उनकी पत्नी कौन हो! वह तो आप ही हो सकती हैं, श्री ब्रह्माजी ने इस कार्य के लिए मुझे यहाँ मंदिराचल पर्वत पर तप करने के लिए भेजा था। अब आप ही अपनी मोहिनी माया से भगवान सदाशिव को मोहित करके संसार का उपकार कीजिए।''

इस पर श्रीजगदम्बा ने कहा-''ऐसा ही होगा, मैं तुम्हारी स्त्री

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.


के गर्भ से पुत्री रूप होकर जन्म लूंगी और भगवान सदाशिव को अपनाने के लिए कठिन तप करूंगी, एक बात स्मरण रखना वह यह कि तुमने अहंकार बिल्कुल नहीं करना, यदि अहंकार करोगे तो तुम्हारा अहंकार नष्ट हो जाएगा।

इतना कहकर भगवती शिवा अन्तर्ध्यान हो गई।

वहां से लौटकर दक्ष प्रजापति ने बहुत-सी मानसी सृष्टि की और दस हजार पुत्र उत्पन्न किए, मगर वह सब के सब तुम्हारे उपदेश के बैरागी हो गए यह देखकर दक्ष को बड़ा भारी दुख हुआ और उसने तुमको क्रोध में भर शाप दे दिया कि तुम दो घड़ी से अधिक कहीं पर भी न रूक पाओगे। इस प्रकार तुमको शाप देकर वह तनिक शांत हो गए और मैथुनी सृष्टि का विचार किया, इसके पश्चात उन्होंने पच्चजन्या से हजारों पुत्र उत्पन्न किए, यह पुत्र भी अपने बड़े भाईयों की भाँति बैरागी हो गए। इसके पश्चात उन्होंने अपनी स्त्री के गर्भ से साठ कन्याएं कीं, जिनमें से उन्होंने दस कन्याएं धर्म को, तेरह कश्यप को, दो भूतगिरस, दो कुशाश्व और शेष गरूड़ के साथ ब्याह दीं। जिनकी सन्तानों से तीनों लोक भर गए, इन साठ कन्याओं के उत्पन्न होने के पश्चात दक्ष प्रजापति को भगवती उमा ने दर्शन देकर कहा-''प्रजापते! तुमने जो मुझे कन्या के रूप में जन्म लेने के लिए तपस्या की थी मेरे कथानुसार तुम्हारा अभीष्टि अवश्य सिद्ध होगा उसके लिए तुमको तप करना होगा। दक्ष को ऐसा कहकर भगवती दक्ष प्रजापति की पत्नी के पास जाकर बालरूप धारण करके लेट गई और रोने लगीं।

***

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

## अंग्रेजी मास्टर

यह अंग्रेजी का कोर्स । इसमें मैट्रिक व इण्टर तथा बी.ए. के विद्यार्थियों को भी पढ़ते समय काफी सहायता मिलती है । अंग्रेजी मास्टर केवल अंग्रेजी सिखाने का ही कार्य नहीं करता बल्कि डिक्शनरी का भी कार्य करता है । जिसमें भी एक बार इसे लगाया उसने ही अपने मित्रों के लिए दस-दस प्रतियों का आर्डर दिया और इसकी प्रशंसा भी की । आज तक जितने भी इंगलिश टीचर छपे हैं यह उनमें से सबसे अच्छा है । आप पुस्तक मंगाकर लाभ उठायें । डाक सहित कीमत 50/- रुपये ।

## सचित्र वर्कशाप कोर्स

यह पुस्तक कारीगरों की जान और हुनरों की खान है । जिसकी आजकल बड़ी जरूरत है । मूल्य 50/- रुपये डाक खर्च माफ ।

पुस्तकें वी॰पी॰ द्वारा मंगाने का पता

**जैन पुस्तकालय** (N.B.)

**पो॰बॉ॰ नं॰ 1025, दिल्ली-110006**

## आसाम बंगाल का जादू

इस पुस्तक में ऐसे-ऐसे आश्चर्यजनक खेल हैं जैसे मनुष्य को गायब करना, मनुष्य को कुत्ता, बंदर और भेड़-बकरी आदि बनाना, डिब्बी में रुपया छुपाना, गर्म लोहे की जंजीर हाथ से पकड़ना, आदमी की शक्ल बदलना, जादू की परी बनना, मुंह से आग निकलना, दहकते अंगारों में नंगे पांवों चलना, कटे हुए सर का लगाना, अन्य प्रकार के कोई खेल आसानी से कर सकते हैं । कीमत 50/- रुपये, डाक खर्च सहित ।

## सच्चा वशीकरण मंत्र

इस पुस्तक की सहायता से चाहे जिस स्त्री पुरुष को वशीभूत करके मनचाहा काम कर सकते हैं । राज दरबार में विजय पाना, लड़ाई में शत्रुओं को नीचा दिखाना, अपने इष्ट मित्रों को यंत्र-मंत्र कर दूर देश से बुलाना आदि बातों का वर्णन है । मूल्य 50/- रुपये डाक खर्च माफ ।

पुस्तकें वी॰पी॰ द्वारा मंगाने का पता

**जैन पुस्तकालय** (N.B.)

**पो॰बॉ॰ नं॰ 1025, दिल्ली-110006**

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

## अलौकिक शक्तियां

घरेलू साधनाएं जिनके द्वारा आप रहस्यमयी अलौकिक शक्तियों के स्वामी बनकर लोगों को अपने वश में कर लेना, मृत आत्माओं को बुलाकर उनमें से बातचीत करना, दिव्य दृष्टि प्राप्त करके वर्तमान, भूत व भविष्य की बातें बता देना आदि चमत्कारिक कार्य कर सकते हैं। विघ्न बाधाएं दूर करके मनोकामना पूर्ति के लिए यन्त्र, मन्त्र और तन्त्र आदि भी दिए हैं। अनेकों चित्र । मूल्य : 50.00

## बिना हथियारों के आत्मरक्षा

न्यूयार्क के एक रिटायर्ड पुलिस कमिश्नर की लिखी इस पुस्तक से जूडो और जू-जित्सू के पचासों प्रभावशाली दांव-पेंच घर बैठे सीखकर अपने से दो गुने भारी हमलावर को पलक झपकते ही जमीन पर पटक सकते हैं। चाकू-छुरे के हमले से बचने के दांव पेंच भी बताए हैं। चित्र 150

मूल्य : 40.00

## कराटे-कुंगफू फाइटिंग कोर्स

भयंकर जापानी युद्ध कलाएं-कराटे और कुंगफू-घर बैठे इस कोर्स द्वारा सीखिए। शरीर को गैंडे जैसा सख्त बनाने के गुप्त रहस्य तथा गुण्डों के साथ जमकर मार-धाड़ करने और उनको पछाड़ने के पचासों दांव-पेंच व पैंतरे भी दिए हैं। 275 चित्र

मूल्य : 40.00

वी॰ पी॰ पी॰ द्वारा पुस्तकें मंगाने का पता -

**अनीता पॉकेट बुक्स (L)**
**1943, खारी बावली दिल्ली - 6**

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh


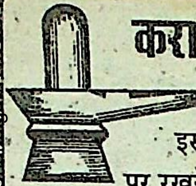

# करामाती सिद्ध शिवलिंग

## विज्ञान का अद्‌भुत चमत्कार

इस शिवलिंग को पूजा पाठ वाली जगह पर रखने से आपकी सभी मनोकामनाएँ पूरी होंगी। जैसे स्त्री पुरुष को वश में करना, जिसका भी नाम लेंगे, कितना भी पत्थर दिल हो आपके कदमों में आ गिरेगा। सन्तान प्राप्ति, परीक्षा में पास, ऊँची नौकरी, दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति, जमीन में गड़ी दौलत, लॉटरी, जुए में जीत, सभी कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। इसका असर 21 घन्टे में आरम्भ हो जाता है। कीमत—करामाती मूल्य 251 रु., स्पेशल मूल्य 501 रु.।

**हनुमान ज्योतिष भण्डार (L.P.)**

पो. बॉ. नं. 1779, दिल्ली-110006

# दुर्गा माता का स्पेशल ताबीज

## सर्व मनोकामना पूर्ण

इस ताबीज़ को अपने पास रखने या पहनने से आपके सब कष्ट दूर हो जायेंगे। आपकी मनोकामना पूरी होगी। किसी को वंश में करना, गृह क्लेश, भूत-प्रेत, ऊपरी चक्कर, परीक्षा में पास, कर्ज व रोग से छुटकारा, व्यापार में तरक्की, लॉटरी व जुए में जीत। आपके मकान में गड़ी दौलत इस ताबीज को पहनने से रात को सपने में दिखाई देगी। मन मानी मुराद पूरी होगी। ताबीज की कीमत 251 रुपए, करामाती स्पेशल ताबीज 501 रुपए। वी.पी. द्वारा मँगाने का पता—

**हनुमान ज्योतिष भण्डार (L.P.)**

पो. बॉ. नं. 1779, दिल्ली-110006

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

007 ऑटोमैटिक रिवॉल्वर

एकदम नई टैक्नोलोजी

मूल्य 225/-

500 शॉट रिवॉल्वर

गारन्टी के साथ भेजा जाता है।

पिकनिक, ड्रामा, शूटिंग, जानवरों, चोरों आदि से आत्मरक्षा, जोरदार आवाज के साथ चिनगारियाँ व धुआँ फेंकने वाला रिवॉल्वर। पसन्द न आने पर पूरी कीमत वापस।

500 शॉट व लैदर केश फ्री | डाक खर्च 25/-Extra

नोट : कृपया आप रुपया एडवांस न भेजें।

विक्की एजेन्सी (L.P.)

पो. बॉ. नं. 1131, दिल्ली-110006

श्री दुर्गा माता की चमत्कारी माला 108 दाने वाली

इस माला को पहनने से आपके सब दुःख दूर होंगे। मनो कामना पूरी होगी, किसी को वश में करना। गृह क्लेश, भूतप्रेत (ऊपरी चक्कर), परीक्षा में पास, ब्लड प्रेशर, कर्ज व रोग से मुक्ति, व्यापार में तरक्की, लॉटरी में तरक्की, लॉटरी व जुए में जीत। आपके मकान में गढ़ी दौलत माला पहनते ही रात को दिखाई देगी। मनचाही मुराद पूरी करें।

स्पेशल माला सिद्ध की हुई का मूल्य 251 रुपए, काम न होने पर दुगुनी कीमत वापस की गारन्टी है।

वी. पी. द्वारा मँगाने का पता :

हनुमान ज्योतिष भण्डार (L.P.)

पो. बॉ. नं. 1779, दिल्ली-110006

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

## कमला कढ़ाई कशीदाकारी

कमल बी.ए. किरोशिया, क्रासस्टिच तथा सादा कढ़ाई तीनों प्रकार की कशीदाकारी सीखने के लिए एक ही पुस्तक पर्याप्त होगी। इसकी सहायता से चद्दरें, मेजपोश, पेटीकोट तथा अन्यान्य की सारी चीजें आपके घर पर ही बन सकेंगी। दहेज तथा लड़कियों को पारितोषिक में देने के लिए अत्यन्त उपयोगी है।

मूल्य 75/- रुपये डाक खर्च अलग।

## आतिशबाजी

रंग-बिरंगी आतिशबाजियाँ-फुलजड़ी बनाना, अनार बनाना, आतिशी सांप बनाना आदि सब तरह की नई से नई आतिशबाजी बनाना इसमें बताया गया है।

मूल्य 75/- रुपये डाक खर्च अलग।

# जैन पुस्तकालय (L.N.)

1917, कूचा चेलान, खारी बावली, दिल्ली-110006

## असली हनुमानजी की माला

इसे पहनने या पास रखने से मनचाही स्त्री पुरुष को वश में कर सकते हैं। जिसका भी नाम लेंगे, कितना ही पत्थर दिल क्यों न हो, आपके कदमों में आ गिरेगा और आपकी इच्छानुसार कार्य करेगा। व्यापार में लाभ मुकदमें में जीत, सन्तान प्राप्ति, परीक्षा में सफलता, ऊँची नौकरी, दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति, मनचाही शादी होगी। गृह क्लेश, प्रेत बाधा, रोग दुःख, कर्ज से छुटकारा मिलेगा। जमीन में गढ़ी दौलत स्वप्न में दिखाई देगी। लाटरी, जुए में जीत। दुष्ट ग्रह शान्त होंगे। सभी कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। खुशियाँ आपके चारों और होंगी। खोई वस्तु की प्राप्ति, स्वास्थ्य में सुधार, स्मरण शक्ति में वृद्धि, नौकरी में प्रोन्नति होगी। मूल्य 251/- रुपये डाक खर्च सहित।

*विशेष : काम न होने पर कीमत वापस होने की गारन्टी*

# हनुमान ज्योतिष भण्डार (L.N.)

पो. ब. 1779, दिल्ली-110006

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

## हस्तरेखा विज्ञान

संसार प्रसिद्ध अंग्रेज भविष्यवक्ता कीरो की लिखी हुई इस पुस्तक की सहायता से किसी व्यक्ति के हाथ की रेखाएं देखकर उसके चरित्र, आयु, स्वास्थ्य, प्रेम-रोमांस, धन-सम्पत्ति आदि से सम्बन्धित भावी जीवन में घटने वाली समस्त घटनाओं की सच्ची ज़ानकारी प्राप्त की जा सकती है। दर्जनों चित्रों से सुसज्जित प्रमाणिक ग्रन्थ ।

मूल्य : 40.00

## अंक विद्या

जगत प्रसिद्ध भविष्यवक्ता कीरो द्वारा रचित पुस्तक जिसके द्वारा किसी व्यक्ति के जन्म की तारीख अथवा केवल उसके नाम से ही बनने वालें अंको द्वारा हिसाब लगाकर आप उसके जीवन भर का हाल बता सक्ते है। आने वाले खतरों से उसे आगाह किया जा सकता है। अनेकों चित्र। मूल्य : 40.00

## चमत्कारिक मन्त्र, तन्त्र और टोटके

लेखक -- के० ए० दुबे 'पदमेश'

तन्त्र विद्या तथा ज्योतिष के प्रकाण्ड विद्वान तथा 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' के स्थायी लेखक पदमेश जी ने इस पुस्तक में ऐसे मन्त्र, तन्त्र, ताबीज और टोटके आदि दिये हैं जिनसे आपके बिगड़े काम बन सकते हैं, समस्त मनोकामनाएँ पूरी हो सकती हैं।

मूल्य : 50.00

वी० पी० पी० द्वारा पुस्तकें मंगाने का पता। -

**अनीता पाकेट बुक्स (L)**
**194.., खारी बावली दिल्ली - 6**

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.


# श्री वैभव लक्ष्मी व्रतकथ

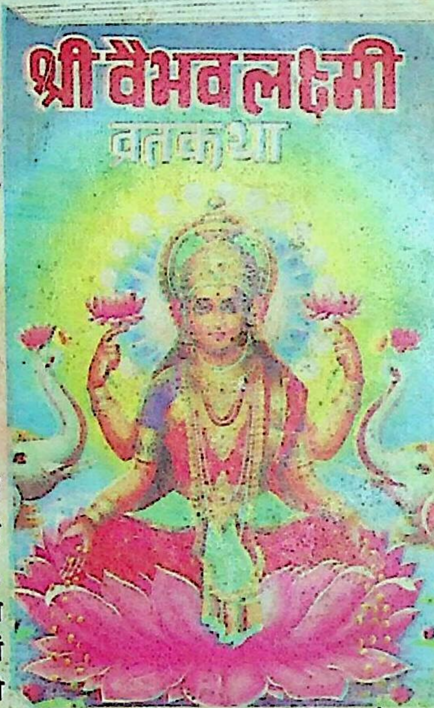


घोर कलयुग में
आशा की एक नई
चमकती किरण

यह मात्र पुस्तक अथवा व्रत नहीं है अपितु प्रत्येक गृहस्थी एवं जनसाधारण के लिये अभावों, परेशानियों को दूर करके धन प्राप्ति का सरल एवं चमत्कारिक ढंग है। जिस किसी भाई के कारोबार में परेशानियाँ पैदा हो रही हैं, व्यापार कम हो रहा है अथ कोई अन्य आर्थिक समस्याएँ हैं या कोई मानसिक व शारीरिक कष्ट या कलेश है। सिर्फ एक बार इस पुस्तक को पढ़ें तथा विधि-विधान सहित को करें। जिसके फलस्वरूप आप 'माँ वैभव लक्ष्मी' की कृपा से अ सभी मनोकामनायें अतिशीघ्र प्राप्त कर सर्व सुखी होंगे।

मूल्य : 6.

पुस्तक पर **लक्ष्मी प्रकाशन, दिल्ली** तथा पुस्तक का रजि॰ नं॰ L-15296/96 देख

प्रकाशक : **लक्ष्मी प्रकाशन**

4734, प्रथम मंजिल, बल्लीं मारान, दिल्ली-6 • फोन : 2917707

पुस्तक को निकट के बुक स्टाल से लें, न मिलने पर प्रकाशक से मँगवायें, पाँच प्रतियों से कम का आदेश न भेजें।

कृपया प्रचार में बाँटने वाले सज्ज प्रकाशक से सम्पर्क करें। उन्हें पुस्तक लागत मात्र पर दी जायेगी